फ़ैज़ की ग़ज़लें और नज़्में

फ़ैज़ की ग़ज़लें और नज़्में

सम्पादक

नूरनबी अब्बासी

नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़

दरीबा कलाँ दिल्ली।

प्रकाशक :
एन० डी० सहगल एण्ड सन्ज़,
दरीबा कलाँ, दिल्ली ।

प्रथम संस्करण सन् १९५९

मूल्य : २ रुपये ५० नये पैसे

आवरण : द्वारकाधीश

मुद्रक :
हरि हर प्रेस,
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली ।

FAIZ KI GHAZALEN AUR NAZMEN : NOOR NABI ABBASI : Rs. 2·50

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

'दस्ते-सबा' की भूमिका में फ़ैज़ ने लिखा है कि मानव जीवन के सामूहिक संघर्ष की मर्यादा और उस संघर्ष में यथाशक्ति भाग लेना केवल जीवन की ही माँग नहीं अपितु कला की भी माँग है।

इसी सिद्धान्त के अनुकरण का यह अनिवार्य परिणाम है कि फ़ैज़ ने मानव-जीवन का केवल बाह्य रूप ही नहीं देखा बल्कि उनकी पैनी दृष्टि उसकी गहराइयों तक पहुंची और वह उसकी नग्नता तथा कटुता पर दृष्टि-पात करने का लोभ संवरण न कर सके।

आधुनिक काल के तरुण कवियों में से फ़ैज़ ही एक मात्र ऐसे कवि हैं जिन के यहाँ वासना की उलझनों के लक्षण सबसे कम मिलते हैं क्योंकि फ़ैज़ का सम्पर्क अन्य शाइरों की भाँति केवल प्रेयसी से ही नहीं अपने देश की समस्य जनता से है, उनके संघर्ष से है और उनमें निहित उन क्रियाशील शक्तियों से है जिनसे साधारण शाइर का सम्पर्क नहीं होता। वह मात्र अपनी कल्पना और शब्द-चयन की एक थोथी आकृति तैयार करता है और उसी को अपनी सृजन-शक्ति का चरम-बिन्दु समझ कर आत्म-सन्तुष्टि का अनुभव करता है। विशेषकर ग़ज़ल जैसे कवितांग में जिसमें स्वयं इतना विस्तार नहीं वह और भी संतुष्ट हो जाता है।

'फ़ैज़' ने, जिनके लिए कवि का कर्त्तव्य केवल प्रेक्षण ही नहीं संघर्ष भी है और साथ ही किसी वस्तु अथवा दृश्य का दर्शन ही नहीं प्रदर्शन भी उसका धर्म है, जीवन की गहराई में प्रवेश किया है और सौन्दर्य तथा रोमांस के स्वर्णिम पटल के उस पार यथार्थ की एक झलक देखी है।

उन्होंने ग्राज़ुग्रों के मक़तल,[1] भूख उगाने वाले खेत, खाक में लिथड़े हुए ग्रौर खून में नहाये हुए जिस्म, बाज़ारों में बिकता हुग्रा मज़दूर का गोश्त, नातवानों[2] के निवालों[3] पर झपटते हुए उक़ाब[4] देखे हैं। मानस की निर्व्याज तड़प ग्रौर शरीर की निराश पुकार सुनी है। नासूरों से बहती हुई पीप की दुर्गन्ध सूंघ ली है ग्रौर यथार्थ की इस नग्नता पर उसकी कतिपय नज़्मों में उनकी भावुकता फूट पड़ती है।

फ़ैज़ के ग्रपने देश तथा जन-जीवन के प्रति गहरे सम्बन्ध के ही बारे में श्री सज्जाद ज़हीर ने कहा है कि उनके प्रेरक तथा प्रवाहमय ग्रलंकारों में हमारे देश के फूलों की सुगध है उनके विचारों में उन सच्चाइयों तथा जन-वादी लक्ष्यों की ग्राभा है जिनसे हमारी जाति के महान बहु-संख्यकों के हृदय प्रकाशमान हैं ग्रौर भारत तथा पाकिस्तान में फ़ैज़ की लोकप्रियता का यही कारण है।

शाइरी को लोग एक ग्रर्से से ग्रपने मनोरंजन का साधन-मात्र समझते रहे हैं; कुछ ने इस सिद्धान्त का खण्डन करके यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि कविता केवल जातियों तथा समूहों के नैतिक जीवन को सुधारने का साधन है। वस्तुतः ये दोनों ही सिद्धान्त सर्वथा मान्य नहीं हैं। ग्राधुनिक कवि न तो इसे मात्र मनोविनोद का साधन ग्रौर न ही जातियों का सुधार-साधन मानते हैं ग्रपितु इन दोनों के सामंजस्य को कविता का लक्ष्य मानना एक हद तक उचित समझते हैं। फ़ैज़ ने ग़ज़ल को मात्र एक कवितांग के रूप में नहीं स्वीकार किया ग्रपितु उसमें कुछ ताज़गी तथा मृदुलता भी उत्पन्न की। उनकी ग़ज़लें कुछ हद तक प्राचीन कवियों के विचारों की प्रतिध्वनि हैं। परन्तु यह कवि का दोष नहीं। वस्तुतः प्राचीन तथा ग्रर्वाचीन के सामंजस्य से यदि श्रेष्ठ कविता का ग्राविर्भाव होता है तो वह ग्रभीष्ट ही है। प्राचीन परंपराग्रों में जो कुछ श्रेष्ठ है उसे स्वीकार करना कवि ग्रथवा साहित्यकार का धर्म ही है। यही कारण है कि फ़ैज़ के यहाँ हमें प्राचीन परंपराग्रों, प्राचीन

---

१. इच्छा का वधस्थान २. निर्बल लोग ३. ग्रास ४. गिद्ध

कविता की उपमाओं तथा अलंकारों का खण्डन नहीं मिलता बल्कि पुरानी चीज़ों को नये वस्त्रों में हम उनके यहाँ देखते हैं। 'ग़ालिब' का शेर है :

क़फ़स में मुझसे रूदादे-चमन कहते न डर हमदम
गिरी है जिस पे कल बिजली वो मेरा आशियाँ क्यों हो

उसी को फ़ैज़ के यहाँ देखिये :

चमन पे ग़ारते-गुलचीं से जाने क्या गुज़री
क़फ़स से आज सबा बेक़रार गुज़री है

या 'ग़ालिब' कहते हैं :

लिखते रहे जुनूं की हिकायाते-ख़ूं चकाँ
हरचंद इसमें हाथ हमारे क़लम हुए

और फ़ैज़ ने कहा है :

हम परवरिशे - लौहो - क़लम करते रहेंगे
जो दिल पे गुज़रती है रक़म करते रहेंगे

फ़ैज़ का ऐतिहासिक शक्तियों का ज्ञान तथा जन-शक्तियों के प्रति जागरूकता उनकी वे विशेषताएँ हैं जो उनको आधुनिक उर्दू कवियों में श्रेष्ठता प्रदान करते हैं और यही कारण है कि आधुनिक कतिपय शाइरों पर उनकी कविता का गहरा प्रभाव पड़ा है।

फ़ैज़ का यह संग्रह, जो उनकी तीन पुस्तकों 'नक़्शे-फ़रियादी', 'दस्ते-सबा' तथा 'ज़िन्दाँनामा' पर आधारित है, हिन्दी पाठकों को फ़ैज़ की कविता के क्रमिक विकास का मूल्यांकन करने में सहायक सिद्ध होगा।

२३३५. छत्ता मोमगराँ, **नूरनबी अब्बासी**
तुर्कमान गेट, दिल्ली।

रंग पैराहन का खुशबू जुल्फ़ लहराने का नाम
मौसमे-गुल[1] है तुम्हारे बाम पर आने का नाम
दोस्तो उस चश्मो-लब की कुछ कहो जिसके बग़ैर
गुलसिताँ की बात रंगी है न मैख़ाने का नाम
फिर नज़र में फूल महके दिल में फिर शम्एँ जलीं
फिर तसव्वुर ने लिया उस बज़्म में जाने का नाम
दिलबरी ठहरी ज़ुबाने-ख़ल्क़ खुलवाने का नाम
अब नहीं लेते परी-रू[2] ज़ुल्फ़ बिखराने का नाम
अब किसी लैला को भी इक़रारे - महबूबी नहीं
इन दिनों बदनाम है हर एक दीवाने का नाम
मोहतसिब की ख़ैर ऊँचा है उसी के फ़ैज़ से
रिन्द का साक़ी का मै का ख़ुम का पैमाने का नाम
हमसे कहते हैं चमन वाले ग़रीबाने - चमन
तुम कोई अच्छा सा रखलो अपने वीराने का नाम
'फ़ैज़' उनको है तक़ाज़ा - ए - वफ़ा हमसे जिन्हें
आश्ना के नाम से प्यारा है बेगाने का नाम

◇ ◇ ◇

---

१. वसन्त ऋतु २. परी सम सुन्दर

◇ ◇

तुम आये हो न शबे-इन्तेज़ार गुज़री है
तलाश में है सहर बार बार गुज़री है

जुनूँ[१] में जितनी भी गुज़री बकार[२] गुज़री है
अगर्चे दिल पे ख़राबी हज़ार गुज़री है

हुई है हज़रते-नासेह से गुफ़्तगू जिस शब
वो शब ज़रूर सरे-कूए-यार[३] गुज़री है

वो बात सारे फ़साने में जिसका ज़िक्र न था
वो बात उनको बहुत नागवार गुज़री है

न गुल खिले हैं न उनसे मिले न मै पी है
अजीब रंग में अबके बहार गुज़री है

चमन पे ग़ारते-गुल्चीं[४] से जाने क्या गुज़री
क़फ़स से आज सबा बेक़रार गुज़री है

◇ ◇ ◇

१. उन्माद २. सार्थक ३. यार की गली में ४. माली की लूट-खसूट

◇ ◇

दोनों जहान तेरी मुहब्बत में हार के
वो जा रहा है कोई शबे - ग़म गुज़ार के
वीराँ है मैकदा ख़ुमो - साग़र[1] उदास हैं
तुम क्या गये कि रूठ गये दिन बहार के
इक फ़ुर्सते-गुनाह मिली वो भी चार दिन
देखे हैं हमने हौसले परवरदिगार के
दुनिया ने तेरी याद से बेगाना कर दिया
तुझसे भी दिल फ़रेब हैं ग़म रोज़गार[2] के
भूले से मुस्करा तो दिये थे वो आज 'फ़ैज़'
मत पूछ वलवले दिले - नाकर्दाकार[3] के

◇ ◇ ◇

१. शराब का प्याला और मटका २. सांसारिक दुख ३. अनुभवहीन

◇ ◇

हम पर तुम्हारी चाह का इल्ज़ाम ही तो है
दुश्नाम[1] तो नहीं है ये इकराम[2] ही तो है
करते हैं जिस पे तान[3] कोई जुर्म तो नहीं
शौक़े - फ़िज़ूलो - उल्फ़ते - नाकाम[4] ही तो है
दिल मुद्दई के हर्फ़े - मलामत[5] से पाक है
ऐ जाने-जाँ ये हर्फ़ तिरा नाम ही तो है
दिल ना उमीद तो नहीं नाकाम ही तो है
लम्बी है ग़म की शाम मगर शाम ही तो है
दस्ते - फ़लक[6] में गर्दिशे - तक़दीर[7] तो नहीं
दस्ते - फ़लक में गर्दिशे - अय्याम ही तो है
आख़िर तो एक रोज़ करेगी नज़र वफ़ा
वो यारे - ख़ुश ख़िसाल[8] सरे - बाम[9] ही तो है
भीगी है रात 'फ़ैज़' ग़ज़ल इब्तेदा करो
वक़्ते - सुरूद[10] दर्द का हंगाम ही तो है

◇ ◇ ◇

१. गाली २. कृपा ३. व्यंग ४. व्यर्थ की चाह तथा असफल प्रेम ५. धिक्कार के शब्द ६. विधाता का हाथ ७. भाग्य-चक्र ८. सुस्वभावी मित्र ९. छत पर १०. गाने का समय

◇ ◇

इश्क़ मिन्नत कशे-क़रार[१] नहीं
हुस्न मजबूरे - इन्तेज़ार नहीं
तेरी रंजिश का इन्तेहा मालूम
हसरतों का मिरी शुमार नहीं
अपनी नज़रें बिखेर दे साक़ी
मै बअन्दाज़ - ए - ख़ुमार[२] नहीं
ज़ेरे-लब है अभी तबस्सुमे-दोस्त[३]
मुंतशिर जलवए-बहार[४] नहीं
अपनी तकमील कर रहा हूँ मैं
वर्ना तुझसे तो मुझको प्यार नहीं
चार - ए - इन्तेज़ार[५] कौन करे
तेरी नफ़रत भी उस्तवार[६] नहीं
'फ़ैज़' ज़िदा रहें वो हैं तो सही
क्या हुआ गर वफ़ा - शिआर[७] नहीं

◇ ◇ ◇

१. चैन का आभारी २. ख़ुमार उत्पन्न करने योग्य ३. मित्र की मुस्कान ४. वसन्त का दृश्य ५. प्रतीक्षा रूपी निदान ६. स्थायी ७. वफ़ादार

◇ ◇

दिल में अब यूँ तिरे भूले हुए ग़म आते हैं
जैसे बिछड़े हुए काबे में सनम[१] आते हैं
एक इक करके हुए जाते हैं तारे रोशन
मेरी मंज़िल की तरफ़ तेरे क़दम आते हैं
रक़्से-मै तेज़ करो साज़ की लय तेज़ करो
सू-ए-मैख़ाना[२] सफ़ीराने - हरम[३] आते हैं
कुछ हमीं को नहीं एहसान उठाने का दिमाग़
वो तो जब आते हैं माइल-ब-करम[४] आते हैं
और कुछ देर न गुज़रे शबे-फ़ुर्क़त[५] से कहो
दिल भी कम दुखता है वो याद भी कम आते हैं

◇ ◇ ◇

१. बुत २. मधुशाला की ओर ३. काबे के यात्री ४. कृपा करने के लिए तत्पर ५. वियोग की रात

◇ ◇

इज्ज़े-अहले-सितम[1] की बात करो
इश्क़ के दम क़दम की बात करो
बज़्मे - अहले - तरब[2] को शर्माओ
बज़्मे - असहाबे - ग़म[3] की बात करो
बामे - सरवत[4] के ख़ुश नसीबों से
अज़्मते - चश्मे - नम[5] की बात करो
है वही बात यूँ भी और यूँ भी
तुम सितम या करम की बात करो
ख़ैर हैं अहले - दैर[6] जैसे हैं
आप अहले-हरम की बात करो
हिज्र की शब तो कट ही जायेगी
रोज़े - वस्ले - सनम[7] की बात करो
जान जायेंगे जानने वाले
'फ़ैज़' फ़रहादो - जम की बात करो

◇ ◇ ◇

---

१. अत्याचारियों की कम हिम्मती २. प्रमोद सभा वाले ३. दुखी जनों की सभा ४. समृद्ध लोग ५. सजल नयनों की महानता ६. मंदिर के लोग ७. प्रेमिका के मिलन का दिन।

◇ ◇

कभी-कभी याद में उभरते हैं नक़्शे-माज़ी[1] मिटे-मिटे से
वो आज़माइश दिलो-नज़र की वो क़ुरबतें[2] सी वो फ़ासले से
कभी कभी आर्ज़ू के सहरा[3] में आके रुकते हैं क़ाफ़िले से
वो सारी बातें लगाव की-सी वो सारे उन्वाँ[4] विसाल के से
निगाहो-दिल को क़रार कैसा निशातो-ग़म[5] में कमी कहाँ की
वो जब मिले हैं तो उनसे हर बार की है उल्फ़त नये सिरे से
तुम्हीं कहो रिन्दो-मोहतसिब[6] में है आज शब कौन फ़र्क़ ऐसा
ये आके बैठे हैं मैकदे में वो उठके आये हैं मैकदे से

◇ ◇ ◇

१. अतीत के चिन्ह २. समीपता ३. जंगल ४. शीर्षक ५. सुख-दुःख
६. हिसाब रखने वाला

◇ ◇

कई बार इसका दामन भर दिया हुस्ने-दुआलम[1] से
मगर दिल है कि इसकी ख़ाना-वीरानी[2] नहीं जाती
कई बार इसकी ख़ातिर ज़र्रे-ज़र्रे का जिगर चीरा
मगर ये चश्मे-हैराँ[3] जिसकी हैरानी नहीं जाती
नहीं जाती मता-ए - लालो - गौहर की गराँयाबी
मता-ए - ग़ैरतो - ईमाँ[5] की अरज़ानी नहीं जाती
मिरी चश्मे - तन आसाँ को बसीरत मिल गई जबसे
बहुत जानी हुई सूरत भी पहचानी नहीं जाती
बजुज़[6] दीवानगी वाँ और चारा ही कहो क्या है
जहाँ अक़्लो - ख़िरद की[7] एक भी मानी नहीं जाती

◇ ◇ ◇

१. दोनों लोकों का सौंदर्य २. उजाड़पन ३. विस्मित नेत्र
४. अनुपलब्धता ५. ईमान तथा प्रतिष्ठा की निधि ६. अतिरिक्त
७. होशमंदी

◇ ◇

शेख़ साहब से रस्मो-राह[१] न की
शुक्र है ज़िन्दगी तबाह न की
तुझको देखा तो सेर-चश्म[२] हुए
तुझ को चाहा तो और चाह न की
तेरे दस्ते-सितम[३] का इज्ज़ नहीं
दिल ही काफ़िर था जिसने आह न की
थे शबे-हिज्र काम और बहुत
हमने फ़िक्रे-दिले-तबाह न की
कौन क़ातिल बचा है शहर में 'फ़ैज़'
जिस से यारों ने रस्मो-राह न की

◇ ◇ ◇

१. मैत्री २. नेत्रों की क्षुधा मिटी ३. अत्याचार का हाथ

◇ ◇

शामे - फ़िराक़[१] अब न पूछ आई और आके टल गई
दिल था कि फिर बहल गया जाँ थी कि फिर संभल गई
बज़्मे - ख़याल[२] में तिरे हुस्न की शम्अ जल गई
दर्द का चाँद बुझ गया हिज्र की रात ढल गई
जब तुझे याद कर लिया सुब्ह महक महक उठी
जब तिरा ग़म जगा लिया रात मचल मचल गई
दिल से तो हर मुआम्ला करके चले थे साफ़ हम
कहने में उनके सामने बात बदल बदल गई
आख़िरे - शब के हम सफ़र 'फ़ैज़' न जाने क्या हुए
रह गई किस जगह सबा सुब्ह किधर निकल गई

◇ ◇ ◇

१. वियोग की संध्या २. कल्पना की सभा

◇ ◇

सच है हमीं को ग्रापके शिकवे बजा न थे
बेशक सितम जनाब के सब दोस्ताना थे
हाँ जो जफ़ा भी ग्रापने की क़ायदे से की
हाँ हम ही कारबन्दे - उसूले - वफ़ा[1] न थे
ग्राये तो यूँ कि जैसे हमेशा थे मेहरबाँ
भूले तो यूँ कि गोया कभी ग्राश्ना न थे
क्यूँ दादे - ग़म हमीं ने तलब की बुरा किया
हम से जहाँ में कुश्त-ए-ग़म[2] ग्रौर क्या न थे
हर चारागर[3] को चारागरी से गुरेज़ था
वर्ना हमें जो दुख थे बहुत लादवा[4] न थे
लब पर है तल्ख़िए-मए-ग्रय्याम[5] वर्ना 'फ़ैज़'
हम तल्ख़िए - कलाम पे माइल जरा न थे

◇ ◇ ◇

१. वफ़ा के नियमों का पालन करने वाले २. दुख के मारे हुए
३. उपचारक ४. लाइलाज ५. दिन रूपी मदिरा की कटुता

◇ ◇

हर हक़ीक़त मजाज़[1] हो जाये
काफ़िरों की नमाज़ हो जाये
मिन्नते - चारासाज़[2] कौन करे
दर्द जब जाँ - नवाज़[3] हो जाये
इश्क़ दिल में रहे तो रुस्वा हो
लब पे आये तो राज़ हो जाये
लुत्फ़ का इन्तेज़ार करता हूँ
जोर[4] ता हद्दे - नाज़[5] हो जाये
उम्र बेसूद कट रही है 'फ़ैज़'
काश अफ़्शा-ए - राज़ हो जाये[6]

◇ ◇ ◇

१. अधिकृत २. उपचारक की ख़ुशामद ३. जीवन-वर्द्धक ४. अत्याचार ५. नाज की हद तक ६. भेद खुल जाये

◇ ◇

अब वही हर्फ़े-जुनूँ[१] सबकी ज़ुबाँ ठहरी है
जो भी चल निकली है वो बात कहाँ ठहरी है
आज तक शेख़ के इकराम में जो शै थी हराम
अब वही दुश्मने-दीं[२] राहते-जाँ[३] ठहरी है
है ख़बर गर्म कि फिरता है गुरेज़ाँ[४] नासेह[५]
गुफ़्तगू आज सरे-कूए-बुताँ ठहरी है
वस्ल की शब थी तो किस दर्जा सुबुक गुज़री थी
हिज्र की शब है तो क्या सख़्त गराँ ठहरी है
इक दफ़ा बिखरी तो हात हाई है कब मौजे़-शमीम[६]
दिल से निकली है तो क्या लब पे फ़ुग़ाँ[७] ठहरी है
दस्ते-सैयाद भी आजिज़ है कफ़े-गुल्चीं भी
बू-ए-गुल ठहरी न बुलबुल की ज़ुबाँ ठहरी है
आते आते यूँही दम भर को रुकी होगी बहार
जाते जाते यूँही पल भर को ख़िज़ाँ ठहरी है
उसे हमने जो तर्ज़े-फ़ुग़ाँ की है क़फ़स में ईजाद
'फ़ैज़' गुलशन में वही तर्ज़े-बयाँ[८] ठहरी है

◇ ◇ ◇

१. उन्माद की बात २. धर्म-शत्रु ३. जीवन की ख़ुशी
४. विरक्त ५. उपदेशक ६. सुगंध की लहर ७. आह ८. बात का ढंग

◇ ◇

राज़े-उल्फ़त [१] छुपा के देख लिया
दिल बहुत कुछ जला के देख लिया
और क्या देखने को बाक़ी है
आप से दिल लगा के देख लिया
आस उस दर से टूटती ही नहीं
जाके देखा न जाके देख लिया
वो मिरे होके भी मिरे न हुए
उनको अपना बना के देख लिया
आज उनकी नज़र में कुछ हमने
सबकी नज़रें बचा के देख लिया
'फ़ैज़' तक्मीले-ग़म [२] भी हो न सकी
इश्क़ को आज़मा के देख लिया

◇ ◇ ◇

१. प्रेम का रहस्य २. दुःख की पूर्ति

◇ ◇

तुम्हारी याद के जब ज़ख्म भरने लगते हैं
किसी बहाने तुम्हें याद करने लगते हैं
हदीसे-यार[१] के उन्वाँ निखरने लगते हैं
तो हर हरीम[२] में गेसू सँवरने लगते हैं
हर अजनबी हमें मेहरम[३] दिखाई देता है
जो अब भी तेरी गली से गुज़रने लगते हैं
सबा[४] से करते हैं गुरबत-नसीब[५] ज़िक्रे वतन
तो चश्मे-सुब्ह में आँसू उभरने लगते हैं
वो जब भी करते हैं इस नुत्क़ो-लब[६] की बख़ियागरी
फ़िज़ा में और भी काँटे बिखरने लगते हैं
दरे-क़फ़स पे अँधेरे की मुहर लगती है
तो 'फ़ैज़' दिल में सितारे उतरने लगते हैं

◇ ◇ ◇

१. प्रेम की चर्चा २. घर ३. राज़दार ४. मलय-मारुत
५. निर्वासित ६. मुँह तथा होंठ

◇ ◇

यहाँ वाबस्तगी[1] वाँ बरहमी[2] क्या जानिये क्यों है
न हम अपनी नज़र समझे न हम उनकी अदा समझे
फ़रेबे-आर्ज़ू की सहल-अंगारी[3]. नहीं जाती
हम अपने दिल की धड़कन को तिरी आवाज़े-पा समझे
तुम्हारी हर नज़र से मुन्सलिक[4] है रिश्त-ए-हस्ती
मगर ये दूर की बातें कोई नादान क्या समझे
न पूछो एहदे-उल्फ़त की बस इक ख़्वाबे-परीशाँ[5] था
न दिल को राह पर लाये न दिल का मुद्दआ समझे

◇ ◇ ◇

१. सम्बन्ध २. क्षोभ ३. आसान पसन्दी ४. सम्बद्ध ५. परेशान सपना

◇ ◇

गुलों में रंग भरे बादे-नौबहार[1] चले
चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले
क़फ़स उदास है यारो सबा से कुछ तो कहो
कहीं तो बहरे-ख़ुदा आज ज़िक्रे-यार चले
बड़ा है दर्द का रिश्ता ये दिल ग़रीब सही
तुम्हारे नाम पे आयेंगे ग़मगुसार चले
जो हम पे गुज़री सो गुज़री मगर शबे-हिज्राँ[2]
हमारे अश्क तिरी आक़बत[3] सँवार चले
हुज़ूरे-यार हुई दफ़्तरे-जुनूँ[4] की तलब
गिरह में लेके गरेबाँ का तार-तार चले
मुक़ाम 'फ़ैज़' कोई राह में जँचा ही नहीं
जो कूए-यार में निकले तो सूए-दार[5] चले

◇ ◇ ◇

१. नव वसंत की वायु २. वियोग की रात ३. परलोक ४. उन्माद का वृत्तान्त ५. फाँसी की ओर

◇ ◇

हिम्मते - इल्तेजा नहीं बाक़ी
ज़ब्त का हौसला नहीं बाक़ी
इक तिरी दीद छिन गई मुझसे
वर्ना दुनिया में क्या नहीं बाक़ी
अपनी मश्क़े सितम[1] से हाथ न खेंच
मैं नहीं या वफ़ा नहीं बाक़ी
तेरी चश्मे - अलम नवाज़[2] की ख़ैर
दिल में कोई गिला नहीं बाक़ी
हो चुका ख़त्म एहदे-हिज्रो-विसाल[3]
ज़िन्दगी में मज़ा नहीं बाक़ी

◇ ◇ ◇

१. अत्याचार का अभ्यास २. वेदना पहुँचाने वाली आँख ३. वियोग तथा मिलन का काल

◇ ◇

कब याद में तेरा साथ नहीं कब हात में तेरा हात नहीं
सद शुक्र कि अपनी रातों में अब हिज्र की कोई रात नहीं
मुश्किल हैं अगर हालात वहाँ दिल बेच आयें जाँ दे आयें
दिल वालो कूचए-जानाँ के क्या ऐसे भी हालात नहीं
जिस धज से कोई मक़्तल में गया वो शान सलामत रहती है
ये जान तो आनी जानी है इस जाँ की तो कोई बात नहीं
मैदाने-वफ़ा दरबार नहीं याँ नामो-नसब की पूछ कहाँ
आशिक़ तो किसी का नाम नहीं कुछ इश्क़ किसी की ज़ात नहीं
गर बाज़ी इश्क़ की बाज़ी है जो चाहो लगादो डर कैसा
गर जीत गये तो क्या कहना हारे भी तो बाज़ी मात नहीं

◇ ◇ ◇

◇ ◇

चश्मे-मैगूं[1] ज़रा इधर कर दे
दस्ते-क़ुदरत को बे असर कर दे
तेज़ है आज दर्दे-दिल साक़ी
तल्ख़िए-मै को तेज़तर कर दे
जोशे-वहशत है तश्ना काम[2] अभी
चाक दामन को ताजगर[3] कर दे
मेरी क़िस्मत से खेलने वाले
मुझको क़िस्मत से बेख़बर कर दे
लुट रही है मिरी मता-ए-नियाज़[4]
काश वो इस तरफ़ नज़र कर दे
'फ़ैज़, तक्मीले-आर्ज़ू[5] मालूम
हो सके तो युँही बसर कर दे

◇ ◇ ◇

---

१. मदिरा के रंग की-सी आँखें २. अतृप्त ३. सफल ४. भक्ति रूपी पूंजी ५. अभिलाषा-पूर्ति

◇ ◇

रहे-ख़िज़ाँ[1] में तलाशे-बहार करते रहे
शबे-सियह से तलब हुस्ने-यार[2] करते रहे
ख़याले-यार कभी ज़िक्रे-यार करते रहे
इसी मताअ़ पे हम रोज़गार करते रहे
नहीं शिकायते-हिज्राँ कि इस वसीले[3] से
हम उनसे रिश्तए-दिल उस्तवार[4] करते रहे
वो दिन कि कोई भी जब वज्हे-इंतेज़ार न थी
हम उनमें तेरा सिवा इन्तेज़ार करते रहे
हम अपने राज़ पे नाज़ाँ[5] थे शर्मसार न थे
हरेक से सुख़ने-राज़दार[6] करते रहे
उन्हीं के फ़ैज़ से बाज़ारे-अ़क्ल रोशन है
जो गाह गाह[7] जूनूँ इख़्तियार करते रहे

◇ ◇ ◇

१. पतझड़ का मार्ग २. प्रेमिका का सौंदर्य ३. माध्यम ४. दृढ़
५. गर्व करते थे ६. राज़ की बातें ७. कभी-कभी

◇ ◇

शफ़क़ की राख में जल बुझ गया सितार-ए-शाम
शबे-फ़िराक़ के गेसू फ़िज़ा में लहराए
कोई पुकारो कि इक उम्र होने आई है
फ़लक को क़ाफ़्लाए-राज़ो-शाम[1] ठहराए
ये ज़िद है यादे - हरीफ़ाने - बादा - पैमा की
कि शब को चाँद न निकले न दिन को अब्र आए
सबा ने फिर दरे-ज़िन्दाँ[3] पे आके दी दस्तक
सहर क़रीब है दिल से कहो न घबराए

◇ ◇ ◇

१. दिन-रात का क़ाफ़्ला २. मदिरा नापने वालों के स्पर्धियों की स्मृति ३. जेल का द्वार

◇ ◇

गरानि-ए-शबे-हिज्राँ दुचंद[1] क्या करते
इलाजे-दर्द तिरे दर्द मन्द क्या करते
वहीं लगी है जो नाज़ुक मुक़ाम थे दिल के
ये फ़र्क़ दस्ते-उदू के गज़न्द[2] क्या करते
जगह जगह पे थे नासेह तो कू-ब-कू[3] दिलबर
इन्हें पसन्द उन्हें नापसंद क्या करते
जिन्हें ख़बर थी कि शर्ते-नवागरी[4] क्या है
वो ख़ुशनवा[5] गिल-ए-क़ैदो-बन्द क्या करते
गुलू-ए-इश्क़ को दारो-रसन पहुँच न सके
तो लौट आये तिरे सरबुलन्द क्या करते

◇ ◇ ◇

१. दुगनी २. काटते ३. जगह-जगह ४. आवाज़ की शर्त
५. प्रियम्वद ६. प्रेम की गर्दन

◇ ◇

वहीं हैं दिल के क़राइन[१] तमाम कहते हैं
वो इक ख़लिश[२] कि जिसे तेरा नाम कहते हैं
तुम आ रहे हो कि बजती . हैं मेरी ज़ंजीरें
न जाने क्या मिरे दीवारो-बाम कहते हैं
यही किनारे-फ़लक का सियहतरीं गोशा[३]
यही है मत्ल-ए-माहे-तमाम[४] कहते हैं
पियो कि मुफ़्त लगादी है ख़ूने-दिल की कशीद[५]
गराँ है अब के मए-लाला फ़ाम[६] कहते हैं
फ़क़ीहे-शहर[७] से मै का जवाज़ क्या पूछें
कि चाँदनी को भी हज़रत हराम कहते हैं
नवा-ए-मुर्ग़[८] को कहते हैं अब ज़ियाने-चमन[९]
खिले न फूल इसे इन्तेज़ाम कहते हैं
कहो तो हम भी चलें 'फ़ैज़' अब नहीं सरे-दार
वो फ़र्क़-मरतब-ए-ख़ासो - आम कहते हैं

◇ ◇ ◇

१. अनुमान २. चुभन ३. अत्यधिक अंधकारमय ४. पूर्ण चन्द्र का क्षितिज ५. मदिरा की भट्टी ६. सुर्ख़ रंग की शराब ७. शहर के धार्मिक सिद्धान्तों के ज्ञाता ८. पक्षी की आवाज़ ९. उद्यान की शोभा बढ़ाने वाले

आये कुछ अब्र कुछ शराब आये
उसके बाद आये जो अज़ाब आये
बामे-मीना[1] से माहताब उतरे
दस्ते-साक़ी में आफ़ताब आये
हर रगे-ख़ूँ में फिर चिराग़ाँ हो
सामने फिर वो बे नक़ाब आये
उम्र के हर वरक़ पे दिल की नज़र
तेरी मेहरो-वफ़ा[2] के बाब आये
कर रहा था ग़मे-जहाँ का हिसाब
आज तुम बेहिसाब याद आये
न गई तेरे ग़म की सरदारी
दिल में यूँ रोज़ इन्क़लाब आये
जल उठे बज़्मे-ग़ैर के दरो-बाम
जब भी हम ख़ानुमा ख़राब[3] आये
इस तरह अपनी ख़ामुशी गूँजी
गोया हर सिम्त से जवाब आये
'फ़ैज़' थी राह सर बसर मंज़िल
हम जहाँ पहुँचे कामयाब आये

१ सुराही पर २. कृपा तथा भक्ति ३. निस्सहाय

◇ ◇

तेरी सूरत जो दिल नशीं की है
आश्ना शक्ल हर हसीं की है
हुस्न से दिल लगा के हस्ती की
हर घड़ी हमने आश्तीं[1] की है
सुब्हे-गुल हो कि शामे-मैख़ाना
मदस इस रू-ए-नाज़नीं की है
शेख़ से बे हिरास मिलते हैं
हमने तौबा अभी नहीं की है
ज़िक्रे-दोज़ख़ बयाने-हूरो-क़ुसूर[2]
बात गोया यहीं कहीं की है
अश्क तो कुछ भी रंग ला न सके
खूँ से तर आज आस्तीं की है
कैसे मानें हरम के सहल पसन्द
रस्म जो आशिक़ों के दीं की है
'फ़ैज़' ओजे-ख़याल से हमने
आसमाँ सिन्ध की ज़मीं की है

◇ ◇ ◇

१. मैत्री, सुलह २. हूर तथा जन्नत के महल ३. विचार की ऊँचाई

◇ ◇

यादे-ग़िज़ाल चश्माँ[१] ज़िक्रे-समन अज़ारां[२]
जब चाहा कर लिया है कुंजे-क़फ़स[३] बहाराँ
आँखों में दर्द मन्दी होंटों पे उज़्र ख़्वाही[४]
जानानावार[५] आई शामे-फ़िराक़े - याराँ[६]
नामूसे-जानो-दिल[७] की बाज़ी लगी थी वर्ना
आसाँ न थी कुछ ऐसी राहे-वफ़ा शिआराँ[८]
मुजरिम हो ख़्वाह कोई रहता है नासिहों का
रूए - सुख़न हमेशा सूए - जिगर फ़िगाराँ[९]
है अब भी वक़्त ज़ाहिद तरमीमे-ज़ुहद[१०] करले
सूए - हरम चला है अंबोहे-बादाख़्वाराँ[११]
शायद क़रीब पहुँची सुब्हे-विसाल हम दम
मौजे-सबा लिये है ख़ुशबू-ए-ख़ुशकनाराँ[१२]
है अपनी किश्ते-वीराँ[१३] सर सब्ज़ इस यक़ीं से
आयेंगे उस तरफ़ भी इक रोज़ अब्रो-बाराँ[१४]
आयेगी 'फ़ैज़' इक दिन बादे-बहार[१५] लेकर
तस्नीमे - मै - फ़रोशाँ[१६] पैग़ामे - मै - गुसाराँ[१७]

◇ ◇ ◇

१. हिरनी की-सी सुन्दर आँखों वाली की स्मृति २. सुन्दर गालों का उल्लेख ३. क़ैदखाने का कोना ४. शिकायत ५. प्रेमिका की भाँति ६. मित्रों के वियोग की संध्या ७. तनमन की प्रतिष्ठा ८. वफ़ादारी का मार्ग ९. घायल जिगर की ओर १०. पाक बाज़ी में संशोधन ११. पियक्कड़ों का गिरोह १२. सुखद गोदों की सुगन्ध १३. उजाड़ खेत १४. मेघ तथा वृष्टि १५. वसन्त का समीर १६. मदिरा की नहर १७. मदिरा पीने वालों का सन्देश

◇ ◇

क़र्ज़े-निगाहे-यार[1] अदा कर चुके हैं हम
सब कुछ निसारे-राहे-वफ़ा[2] कर चुके हैं हम
कुछ इम्तेहाने-दस्ते-ज़फ़ा[3] कर चुके हैं हम
कुछ उनकी दस्तरस का पता कर चुके हैं हम
अब एहतियात की कोई सूरत नहीं रही
क़ातिल से रस्मो-राह सिवा कर चुके हैं हम
देखें हैं कौन कौन ज़रूरत नहीं रही
कूए-सितम में सबको ख़फ़ा कर चुके हैं हम
अब अपना इख़्तियार है चाहे जहाँ चलें
रहबर से अपनी राह जुदा कर चुके हैं हम
उनकी नज़र में क्या करें फीका है अब भी रंग
जितना लहू था सर्फ़े-क़बा कर चुके हैं हम
कुछ अपने दिल की ख़ू का भी शुक्राना चाहिए
सौ बार उनकी ख़ू का गिला कर चुके हैं हम

◇ ◇ ◇

१. प्रेमिका की दृष्टि का ऋण २. वफ़ा के मार्ग पर न्योछावर
३. अत्याचारी की परीक्षा

◇ ◇

हुस्न मरहूने-जोशे[१] बादए नाज़[२]
इश्क़ मिन्नत कशे-फ़सूने - नियाज़[३]
दिल का हर तार लर्ज़िशे-पैहम[४]
जाँ का हर रिश्ता वक़्फ़े-सोज़ो-गुदाज[५]
शोरिशे-दर्दे-दिल किसे मालूम
कौन जाने किसी के इश्क़ का राज
मेरी ख़ामोशियों में लर्ज़ा[७] है
मेरे नालों की गुमशुदा आवाज़
हो चुका इश्क़ अब हवस ही सही
क्या करें फ़र्ज़ है अदाए-नमाज़
तू है और इक तग़ाफ़ुले-पैहम[८]
मैं हूँ और इन्तेज़ारे-बे अंदाज़
ख़ौफ़े-नाकामि-ए-उमीद है 'फ़ैज़'
वर्ना दिल तोड़ दे तिलिस्मे-मजाज़[१०]

◇ ◇ ◇

१. सौंदर्य यौवन का आभारी है २. इश्क़ प्रेमिका की उपासना का आभारी है ३. प्रेम के जादू का आभारी ४. निरन्तर कंपन ५. जलन तथा गुदाज़ पर न्योछावर ६. हृदय की पीड़ा का शोर ७. कांप रहे हैं ८. निरन्तर विस्मरण ९. आशा की असफलता का भय १०. अधिकार का जादू

◇ ◇

वफ़ा-ए-वादा नहीं वाद-ए-दिगर भी नहीं
वो मुझसे रूठे तो थे लेकिन इस क़दर भी नहीं
बरस रही है हरीमे-हवस[1] में दौलते-हुस्न
गदा-ए-इश्क़ के कासे में इक नज़र भी नहीं
न जाने किस लिए उमीदवार बैठा हूँ
इक ऐसी राह पे जो तेरी रहगुज़र भी नहीं
निगाहे-शौक़[2] सरे-बज़्म बे हिजाब[3] न हो
वो बेख़बर ही सही इतने बेख़बर भी नहीं
ये एहदे-तर्के-मुहब्बत है किस लिए आख़िर
सुकूने-क़ल्ब[4] इधर भी नहीं उधर भी नहीं

◇ ◇ ◇

१. हवस का घर २. जिज्ञासा की दृष्टि ३. महफ़िल में बेपर्दा न हो
४. हृदय की शांति

◇ ◇

कुछ दिन से इन्तेज़ारे-सवाले-दिगर[1] में है
वो मुज़महिल[2] हया जो किसी की नज़र में है
सीखी यहीं मिरे दिले-काफ़िर ने बन्दगी
रब्बे-करीम है तो तिरी रह गुज़र में है
माज़ी में जो मज़ा मिरी शामो-सहर में था
अब वो फ़क़त तसव्वुरे-शामो-सहर[3] में है
क्या जाने किसको किससे है अब दाद की तलब
वो ग़म जो मिरे दिल में है तेरी नज़र में है

◇ ◇ ◇

१. दूसरे प्रश्न की प्रतीक्षा २. मुर्झाई हुई ३. संध्या तथा प्रभात की कल्पना

◇ ◇

फिर हरीफ़े - बहार[1] हो बैठे
जाने किस किस को आज रो बैठे
या मगर इतनी रायगाँ[2] भी न थी
आज कुछ ज़िन्दगी से खो बैठे
तेरे दर तक पहुँच के लौट आये
इश्क़ की आबरू डुबो बैठे
सारी दुनिया से दूर हो जाये
जो ज़रा तेरे पास हो बैठे
न गई तेरी बेरुख़ी न गई
हम तिरी आर्ज़ू भी खो बैठे
'फ़ैज़' होता रहे जो होना है
शेर लिखते रहा करो बैठे

◇ ◇ ◇

१. बसंत के स्पर्धी २. व्यर्थ

◇ ◇

फिर लौटा है खुरशीदे-जहाँ ताब[१] सफ़र से
फिर नूरे-सहर दस्तो-गरेबाँ है सहर से
फिर आग भड़कने लगी हर साज़े-तरब[२] में
फिर शोले लपकने लगे हर दीद-ए-तर[३] से
फिर निकला है दीवाना कोई फूँक के घर को
कुछ कहती है हर राह हरेक राह गुज़र से
वो रंग है इस साल[४] गुलिस्ताँ की फ़िज़ा का
ओझल हुई दीवारे-क़फ़स हद्दे-नज़र[५] से
साग़र तो खनकते हैं शराब आये न आये
बादल तो गरजते हैं घटा बरसे न बरसे
पापोश[६] की क्या फ़िक्र है दस्तार संभालो
पायाब[७] है जो मौज गुज़र जायेगी सर से

◇ ◇ ◇

१. जाज्वल्यमान सूर्य २. हर्ष के वाद्य ३. सजल नेत्र ४. इस वर्ष ५. जहाँ तक दृष्टि जा सके ६. जूती ७. उथला

◇ ◇

सब क़त्ल होके तेरे मुक़ाबिल से आये हैं
हम लोग सुर्खरू[1] हैं कि मंज़िल से आये हैं
शम्ए-नज़र ख़याल के अंजुम जिगर के दाग़
जितने चिराग़ हैं तिरी महफ़िल से आये हैं
उठकर तो आ गये हैं तिरी बज़्म से मगर
कुछ दिल ही जानता है कि किस दिल से आये हैं
हर इक क़दम अजल था हर एक गाम ज़िन्दगी
हम घूम फिरके कूच-ए-क़ातिल से आये हैं
बादे-ख़िज़ाँ[2] का शुक्र करो 'फ़ैज़' जिसके हाथ
नामे किसी बहारे-शिमाइल[3] से आये हैं

◇ ◇ ◇

---

१. सफल २. हेमन्त के पश्चात् ३. सुन्दरी

◇ ◇

सितम की रस्में बहुत थीं लेकिन न थीं तिरी अंजुमन से पहले
सज़ा ख़ता-ए-नज़र से पहले इताब जुर्मे-सुख़न से पहले
जो चल सको तो चलो कि राहे-वफ़ा बहुत मुख़्तसिर हुई है
मुक़ाम है अब कोई न मंज़िल फ़राज़े-दारो-रसन[1] से पहले
नहीं रही अब जुनूँ की ज़ंजीर पर वो पहली इजारादारी
गिरिफ़्त करते हैं करने वाले ख़िरद[2] पे दीवानापन से पहले
करे कोई तेग़ का नज़ारा अब उनको ये भी नहीं गवारा
बज़िद है क़ातिल कि जाने-बिस्मिल फ़िगार हो जिस्मो-तन से पहले
ग़ुरूरे-सर्वो-समन[3] से कह दो कि फिर वही ताजदार होंगे
जो ख़ारो-ख़स वालिए-चमन[4] थे उरूजे-सर्वो-समन से पहले
इधर तक़ाज़े हैं मस्लेहत[5] के उधर तक़ाज़ा-ए-दर्दे-दिल है
ज़ियाँ सँभालें कि दिल सँभालें असीर ज़िक्रे-वतन से पहले

◇ ◇ ◇

---

१. रस्सी तथा सूली की ऊँचाई २. बुद्धि ३. सरो तथा समन नामक वृक्षों का अहंकार ४. बाग़ के रक्षक ५. समयोचित्य

◇ ◇

बात बस से निकल चली है
दिल की हालत सँभल चली है
अब जुनूँ हद से बढ़ चला है
अब तबीयत बहल चली है
अश्क ख़ूँनाब हो चले हैं
ग़म की रंगत बदल चली है
या यूँ ही बुझ रही हैं शम्एं
या शबे-हिज्र टल चली है
लाख पैग़ाम हो गये हैं
जब सबा एक पल चली है
आओ अब सो रहो सितारो
दर्द की रात ढल चली है

◇ ◇ ◇

◇ ◇

शाख़ पर ख़ूने-दिल रवाँ है वही
शोख़ि-ए-रंगे-गुलिस्ताँ[१] है वही
सर वही है तो आस्ताँ है वही
जाँ वही है तो जाने जाँ है वही
अब जहाँ मेहरबाँ नहीं कोई
कूच-ए-यार मेहरबाँ है वही
बर्क़ सौ बार गिरके ख़ाक हुई
रौनक़े-ख़ाक आशियाँ है वही
आज की शब विसाल की शब है
दिल से हर रोज़ दास्ताँ है वही
चाँद तारे इधर नहीं आते
वर्ना ज़िन्दाँ में आसमाँ है वही

◇ ◇ ◇

१. लाल रंग की शोख़ी

◇ ◇

कुछ मोहतसिबों की ख़लवत में कुछ वाइज़ के घर जाती है
हम बादाकशों के हिस्से की अब जाम में कम तर जाती है
यूं अर्ज़ो-तलब [१] से कब ऐ दिल पत्थर दिल पानी होते हैं
तुम लाख रज़ा की ख़ू डालो कब ख़ू-ए-सितमगर [२] जाती है
बेदाद गरों [३] की बस्ती है याँ दाद कहाँ ख़ैरात कहाँ
सर फोड़ती फिरती है नादाँ फ़रियाद जो दर-दर जाती है

◇ ◇ ◇

१. माँग तथा प्रार्थना २. अत्याचारी की आदत ३. अत्याचारी

◇ ◇

हाँ जाँ के ज़ियाँ की हमको भी तशवीश[1] है लेकिन क्या कीजे
हर रह जो उधर को जाती है मक़्तल से गुज़र कर जाती है
अब कूच-ए-दिलबर का रह रौ[2] रहज़न[3] भी बने तो बात बने
पहरे से अदद टलते ही नहीं और रात बराबर जाती है
हम अहले-क़फ़स तन्हा भी नहीं हर रोज़ नसीमे-सुब्ह वतन
यादों से मुअत्तर आती है अश्कों से मुनव्वर जाती है

◇ ◇ ◇

१. चिंता २. राहगीर ३. लुटेरा

◇ ◇

गर्मि-ए-शौक़े-नज़ारा[1] का असर तो देखो
गुल खिले जाते हैं वो साय-ए-दर तो देखो
ऐसे नादाँ भी न थे जाँ से गुज़रने वाले
नासिहो पन्द[2] करो राह गुज़र तो देखो
वो तो वो है तुम्हें हो जायेगी उल्फ़त मुझसे
इक नज़र तुम मिरा महबूबे-नज़र तो देखो
वो जो अब चाक गरेबाँ भी नहीं करते हैं
देखने वालो कभी उनका जिगर तो देखो
दामने-दर्द को गुलज़ार बना रखा है
आओ इक दिन दिले-पुरख़ूं का हुनर तो देखो
सुब्ह की तरह चमकता है शबे-ग़म का उफ़क़
'फ़ैज़' ता बन्दगी-ए-दीदए-तर तो देखो

◇ ◇ ◇

१. दृश्यावलोकन का उत्साह २. उपदेश

◇ ◇

मुझ से पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न मांग

मुझ से पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न मांग
मैंने समझा था कि तू है तो दरख़्शां[1] है हयात[2]
तेरा ग़म है तो ग़मे-दहर का[3] झगड़ा क्या है
तेरी सूरत से है आलम में[4] बहारों को सबात[5]
तेरी आँखों के सिवा दुनिया में रक्खा क्या है
तू जो मिल जाये तो तक़दीर निगूं हो जाये[6]
यूँ न था मैंने फ़क़त[7] चाहा था यूँ हो जाये
और भी दुख हैं ज़माने में मुहब्बत के सिवा
राहतें[8] और भी हैं वस्ल की[9] राहत के सिवा
अनगिनत सदियों के तारीक बुहीमाना तिलिस्म[10]
रेशमो-अतलसो-कम्ख़्वाब के बुनवाये हुए
जा-ब-जा बिकते हुए कूचा-ओ-बाज़ार में जिस्म
ख़ाक में लिथड़े हुए, ख़ून में नहलाये हुए

◇ ◇ ◇

१. प्रकाशमान २. जीवन ३. सांसारिक चिंताओं का ४. संसार में ५. स्थायित्व ६. सिर झुका ले ७. केवल ८. आनन्द ९. मिलन की १०. अंधकारपूर्ण पाशविक जादू ।

◇ ◇

जिस्म निकले हुए अमराज़[1] के तन्नूरों से
पीप बहती हुई गलते हुए नासूरों से
लौट जाती है उधर को भी नज़र क्या कीजे
अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे
और भी दुख हैं ज़माने में मुहब्बत के सिवा
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा

◇ ◇ ◇

१. रोगों के

◇ ◇

चन्द रोज़ और मिरी जान

चन्द रोज़ और मिरी जान फ़क़त[१] चन्द ही रोज़
ज़ुल्म की छांओं में दम लेने पे मजबूर हैं हम
और कुछ देर सितम सहलें तड़पलें रोलें
अपने अजदाद की[२] मीरास[३] है माज़ूर[४] हैं हम
जिस्म पे क़ैद है जज़्बात पे ज़ंजीरें हैं
फ़िक्र[५] महबूस है[६] गुफ़्तार पे[७] ताज़ीरें[८] हैं
अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिये जाते हैं
ज़िन्दगी क्या किसी मुफ़लिस की क़बा[९] है जिसमें
हर घड़ी दर्द के पैवंद लगे जाते हैं
लेकिन अब ज़ुल्म की मीआद के दिन थोड़े हैं
इक ज़रा सब्र कि फ़रियाद के दिन थोड़े हैं
अर्स-ए-दहर की[१०] झुलसी हुई वीरानी में
हम को रहना है पे यूँही तो नहीं रहना है
अजनबी हाथों का बेनाम गरांबार सितम[११]
आज सहना है हमेशा तो नहीं सहना है

◇ ◇ ◇

---

१. केवल २. पुरखों की ३. दाय ४. विवश ५. विचार ६. क़ैद में हैं अर्थात् जकड़े हुए हैं ७. बोलने पर ८. दण्ड मिलता है ९. निर्धन का कुर्ता १०. संसार-रूपी मैदान की ११. भारी अत्याचार

◇ ◇

तन्हाई

फिर कोई आया दिले-ज़ार[१] नहीं, कोई नहीं
राहरौ[२] होगा कहीं और चला जायेगा
ढल चुकी रात बिखरने लगा तारों का ग़ुबार
लड़खड़ाने लगे ऐवानों में[३] ख़्वाबीदा[४] चिराग़
सो गई रास्ता तक-तक के हर इक राहगुज़ार[५]
अजनबी ख़ाक ने धुंदला दिये क़दमों के सुराग़[६]
गुल करो[७] शम्एँ, बढ़ा दो म-ओ-मीना-ओ-अयाग़[८]
अपने बेख़्वाब[९] किवाड़ों को मुक़फ़्फ़ल कर लो[१०]
अब यहाँ कोई नहीं कोई नहीं आयेगा

◇ ◇ ◇

१. दुखी मन २. राही ३. महलों में ४. सोये हुए ५. मार्ग
६. चिह्न ७. बुझा दो ८. सुराही, प्याले और शराब उठा दो
९. जिनकी आँखों में नींद नहीं, अर्थात् खुले हुए १०. ताले लगा लो

◇ ◇

ख़ुदा वो वक़्त न लाये...

ख़ुदा वो वक़्त न लाये कि सोगवार[1] हो तू
सुकूं की[2] नींद तुझे भी हराम हो जाये
तिरी मसर्रते-पैहम[3] तमाम हो जाये
तिरी हयात[4] तुझे तल्ख़-जाम[5] हो जाये
ग़मों से आईन-ए-दिल[6] गुदाज़[7] हो तेरा
हुजूमे-यास से[8] बेताब होके रह जाये
वुफ़ूरे-दर्द से[9] सीमाब[10] होके रह जाये
तिरा शबाब[11] फ़क़त[12] ख्वाब होके रह जाये
ग़ुरूरे-हुस्न[13] सरापा नियाज़[14] हो तेरा
तवील[15] रातों में तू भी क़रार को[16] तरसे
तिरी निगाह किसी ग़म-गुसार को[17] तरसे
ख़िज़ाँ-रसीदा-तमन्ना[18] बहार को तरसे
कोई जबीं[19] न तिरे संगे-आस्ताँ पे[20] झुके

१. उदास, मलिन-मन २. शांति की ३. स्थायी प्रसन्नता ४. जीवन ५. कड़वा प्याला ६. हृदय-रूपी दर्पण ७. पिघलने वाला ८. निराशाओं की बहुलता से ९. पीड़ाओं की बहुलता से १० पारा ११. यौवन १२. केवल १३. सौन्दर्य का घमंड १४. सिर से पैर तक विनय की मूर्ति १५. लम्बी १६. चैन को १७. सहानुभूति करने वाले को १८. मुर्झाई (विफल) कामना १९. माथा २०. दहलीज़ के पत्थर पर

कि जिन्से-इज्ज़ो-अ़क़ीदत से[1] तुझको शाद[2] करे
फ़रेबे-वाद-ए-फ़र्दा पे[3] ऐतमाद[4] करे
खुदा वो वक्त न लाये कि तुझ को याद आये
वो दिल कि तेरे लिये बेक़रार अब भी है
वो आँख जिसको तिरा इन्तेज़ार अब भी है

◇ ◇ ◇

१. विनय और श्रद्धा से २. प्रसन्न ३. कल के वादे के फ़रेब पर
४. विश्वास

◇ ◇

सोच

क्यों मेरा दिल शाद[1] नहीं है क्यों ख़ामोश रहा करता हूँ
छोड़ो मेरी राम कहानी मैं जैसा भी हूँ अच्छा हूँ
मेरा दिल ग़मगीन है तो क्या ग़मगीं ये दुनिया है सारी
ये दुख तेरा है ना मेरा हम सबकी जागीर है प्यारी
तू गर मेरी भी हो जाये दुनिया के ग़म यूँ ही रहेंगे
पाप के फंदे ज़ुल्म के बंधन अपने कहे से कट न सकेंगे
ग़म हर हालत में मुहलिक[2] है अपना हो या और किसी का
रोना-धोना जी को जलाना यूँ भी हमारा यूँ भी हमारा
क्यूँ न जहाँ का ग़म अपना लें बाद में सब तदबीरें सोचें
बाद में सुख के सपने देखें सपनों की ताबीरें[3] सोचें
बेफ़िक्रे धन-दौलत वाले ये आख़िर क्यों खुश रहते हैं
इनका सुख आपस में बाटें ये भी आख़िर हम जैसे हैं
हम ने माना जंग कड़ी है सर फूटेंगे ख़ून बहेगा
ख़ून में ग़म भी बह जायेंगे हम न रहें ग़म भी न रहेगा

◇ ◇ ◇

१. खुश २. घातक ३. स्वप्न-फल

◇ ◇

मिरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको !

मिरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको
अभी तक दिल में तेरे इश्क़ की क़ंदील[१] रोशन[२] है
तिरे जलवों से बज्मे-ज़िन्दगी[3] जन्नत-ब-दामन[४] है
मिरी रूह अब भी तनहाई में तुझको याद करती है
हर इक तारे-नफ़स में[५] आरज़ू बेदार[६] है अब भी
हर इक बेरंग साअ़त[७] मुन्तज़िर है तेरी आमद की[८]
निगाहें बिछ रही हैं रास्ता ज़रकार[९] है अब भी
मगर जाने-हज़ीं[१०] सदमे सहेगी आख़रिश[११] कब तक
तिरी बेमेहरियों पे[१२] जान देगी आख़रिश कब तक
तिरी आवाज़ में सोई हुई शीरीनियां[१3] आख़िर
मिरे दिल की फ़सुर्दा[१४] ख़लवतों में[१५] जा न पायेंगी
ये अश्कों की फ़रावानी से[१६] धुंदलाई हुई आंखें
तिरी रानाइयों की[१७] तमकनत को[१८] भूल जायेंगी

१. मशाल २. प्रकाशमान ३. जीवन की सभा ४. स्वर्ग समान ५. श्वास ६. जागी हुई ७. क्षण ८. आगमन की ९. सुनहला १०. दुखी प्राण ११. आखिर १२. निष्ठुरताओं पर १३. मिठासें १४. उदास १५. एकांत में १६. बहुलता से १७. सुन्दरता की १८. शान को ।

पुकारेंगे तुझे तो लब कोई लज्ज़त[1] न पायेंगे
गुलू में[2] तेरी उल्फ़त के तराने सूख जायेंगे
मबादा[3] यादहाए-अहदे-माज़ी[4] महव[5] हो जायें
ये पारीना फ़साने[6] मौजहाए-ग़म में[7] खो जायें
मिरे दिल की तहों से तेरी सूरत धुल के बह जाये
हरीमे-इश्क़ की शम्ए-दरख्शां बुझ के रह जाये
मबादा अजनबी दुनिया की ज़ुल्मत[8] घेर ले तुझको
मिरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझ को

◇ ◇ ◇

१. आनन्द २. कंठ में ३. भगवान न करे कि ऐसा हो ४. पुरानी यादें ५. विस्मृत ६. पुरानी (प्रेम) कहानियाँ ७. ग़म की लहरों में ८ अन्धकार

आखरी ख़त

वो वक़्त मिरी जान बहुत दूर नहीं है
जब दर्द से रुक जायेंगी सब ज़ीस्त[१] की राहें
और हद से गुज़र जायेगा अन्दोहे-निहानी[२]
थक जायेंगी तरसी हुई नाकाम निगाहें
छिन जायेंगे मुझसे मिरे आंसू मेरी आहें
छिन जायेगी मुझसे मिरी बेकार जवानी
शायद मिरी उल्फ़त को बहुत याद करोगी
अपने दिले - मासूम को नाशाद[३] करोगी
आओगी मिरी गोर पे[४] तुम अश्क[५] बहाने
नौख़ेज़[६] बहारों के हसीं फूल चढ़ाने
शायद मिरी तुरबत को[७] भी ठुकराके चलोगी
शायद मिरी बेसूद वफ़ाओं पे हँसोगी
इस वज़ए-करम का[८] भी तुम्हें पास[९] न होगा
लेकिन दिले - नाकाम को एहसास न होगा
अलक़िस्सा[१०] मआले-ग़मे - उल्फ़त पे[११] हँसो तुम
या अश्क बहाती रहो फरियाद करो तुम
माज़ी पे[१२] नदामत हो तुम्हें या कि मसर्रत
ख़ामोश पड़ा सोयगा वामांदा-ए-उल्फ़त[१३]

◇ ◇ ◇

१. जीवन की २. भीतरी दुःख ३. दुखित ४. क़ब्र पर ५. आँसू ६. नई ७. कब्र को ८. कृपा के ढंग का ९. लिहाज़ १०. संक्षेप में यह कि ११. प्रेम के दुख के परिणाम पर १२. अतीत पर १३. प्रेम के हाथों श्रान्त

◇ ◇

कुत्ते

ये गलियों के आवारा बेकार कुत्ते
कि बख़्शा गया जिनको ज़ौक़े-गदाई[1]
ज़माने की फिटकार सरमाया[2] इनका
जहाँ-भर की दुतकार इनकी कमाई
न आराम शब को न राहत सवेरे
ग़लाज़त में[3] घर नालियों में बसेरे
जो बिगड़ें तो इक दूसरे से लड़ा दो
ज़रा एक रोटी का टुकड़ा दिखा दो
ये हर एक की ठोकरें खाने वाले
ये फ़ाकों से उकता के मर जाने वाले
ये मज़लूम मख़लूक़[4] गर सर उठाये
तो इन्सान सब सरकशी[5] भूल जाये
ये चाहें तो दुनिया को अपना बनालें
ये आक़ाओं की हड्डियाँ तक चबालें
कोई इनको एहसासे-ज़िल्लत[6] दिला दे
कोई इनकी सोई हुई दुम हिला दे

◇ ◇

१. भीख माँगने की अभिरुचि २. निधि ३. गन्दगी में ४. सृष्टि
५. अवज्ञा ६. अपमान की चेतना

◇ ◇

रक़ीब से

आ कि वाबस्ता[1] हैं उस हुस्न की यादें तुझ से
जिसने इस दिल को परीख़ाना[2] बना रक्खा है
जिसकी उल्फ़त में भुला रक्खी थी दुनिया हमने
दहर को[3] दहर का अफ़साना बना रक्खा है
आश्ना[4] हैं तिरे क़दमों से वो राहें जिन पर
उसकी मदहोश जवानी ने इनायत की है
कारवाँ गुज़रे हैं जिन से उसी रानाई के
जिसकी इन आँखों ने बेसूद[5] इबादत[6] की है
तुझ से खेली हैं वो महबूब[7] हवायें जिन में
उसके मलबूस की[8] अफ़सुर्दा[9] महक बाक़ी है
तुझ पे भी बरसा है उस बाम से[10] महताब का[11] नूर[12]
जिस में बीती हुई रातों की कसक बाक़ी है
तूने देखी है वो पेशानी[13] वो रुख़्सार[14] वो होंट
ज़िन्दगी जिन के तसव्वुर में लुटा दी हमने
तुझ पे उट्ठी हैं वो खोई हुई साहिर[15] आँखें
तुझ को मालूम है क्यूँ उम्र गंवा दी हमने

◇ ◇ ◇

१. सम्बद्ध २. परियों का घर ३. संसार को ४. परिचित ५. व्यर्थ ६. पूजा ७. प्रिय ८. लिबास की ९. मलिन १० छत से ११. चाँद का १२. प्रकाश १३. माथा १४. कपोल १५. जादूगर

◆ ◇

बोल……

बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे
बोल ज़ुबां अब तक तेरी है
तेरा सुतवां[1] जिस्म है तेरा
बोल कि जां अब तक तेरी है
देख कि आहंगर[2] की दुकां में
तुन्द[3] हैं शोले सुर्ख़ है आहन[4]
खुलने लगे क़ुफ़्लों के[5] दहाने[6]
फैला हर इक ज़ंजीर का दामन
बोल ये थोड़ा वक़्त बहुत है
जिस्मो - ज़ुबां की मौत से पहले
बोल कि सच ज़िंदा है अब तक
बोल जो कुछ कहना है कहले

◇ ◇ ◇

---

१. सीधा २. लोहार ३. तेज ४. लोहा ५. तालों के ६. मुँह

आज की रात

आज की रात साज़े-दर्द न छेड़

दुख़ से भरपूर दिन तमाम हुए
और कल की ख़बर किसे मालूम
दोशो-फ़र्दा की[1] मिट चुकी हैं हुदूद[2]
हो न हो अब सहर किसे मालूम

ज़िन्दगी हेच लेकिन आज की रात
एज़दियत[3] है मुमकिन आज की रात

आज की रात साज़े-दर्द न छेड़

अब न दोहरा फ़साना-हाए-अलम[4]
अपनी क़िस्मत पे सोगवार[5] न हो
फ़िक्रे-फ़र्दा[6] उतार दे दिल से
उम्रे-रफ़्ता पे[7] अश्कबार न हो[8]

अहदे-ग़म की हिकायतें[9] मत पूछ
हो चुकीं सब शिकायतें मत पूछ

आज की रात साज़े-दर्द न

◇ ◇ ◇

१. अतीत और भविष्य की २. सीमायें ३. ख़ुदाई ४. दुख की कहानियाँ ५. उदास ६. कल की चिन्ता ७. बीती आयु पर ८. आँसू न बहा ९. दुख के दिनों की कहानियाँ

◇ ◇

ऐ दिले-बेताब ठहर !

तीरगी[१] है कि उमड़ती ही चली आती है
शब की[२] रग-रग से लहू फूट रहा हो जैसे
चल रही है कुछ इस अंदाज़ से नब्ज़े-हस्ती[३]
दोनों आलम का[४] नशा टूट रहा हो जैसे
रात का गर्म लहू और भी बह जाने दो
यही तारीकी[५] तो है ग़ाज़-ए-रुख़्सारे-सहर[६]
सुब्ह होने ही को है ऐ दिले-बेताब ठहर
अभी ज़ंजीर छनकती है पसे-पर्द-ए-साज़[७]
मुतलक़-उल-हुक्म[८] है शीराज़-ए-असबाब[९] अभी
साग़रे-नाब में[१०] आँसू भी ढलक जाते हैं
लग्ज़िशे-पा में[११] है पाबंदि-ए-आदाब[१२] अभी
अपने दीवानों को दीवाना तो बन लेने दो
अपने मैख़ानों को मैख़ाना तो बन लेने दो
जल्द ये सितवते-असबाब[१३] भी उठ जायेगी
ये गरांबारि-ए-आदाब[१४] भी उठ जायेगी
ख़्वाह ज़ंजीर छनकती है छनकती ही रहे

◇ ◇ ◇

१. अन्धकार २. रात की ३. जीवन की नाड़ी ४. दुनियाओं का ५. अन्धकार ६. सुबह के गालों की लालिमा ७. साज के पर्दे के पीचे ८. सर्वोपरि आज्ञा देने वाला ९. कारणों की एकत्रता १०. शराब के प्याले में ११. पाँव की डगमगाहट में १२. झूठे शिष्टाचार की पाबंदी १३. कारणों का दबदबा या आतंक १४. (झूठे) शिष्टाचार का असह्य बोझ

◇ ◇

मौज़ुए-सुख़न*

गुल हुई जाती [1] अफ़सुर्दा[2] सुलगती हुई शाम
धुल के निकलेगी अभी चश्म-ए-महताब से[3] रात
और मुश्ताक़ निगाहों से सुनी जायेगी
और उन हाथों से मस[4] होंगे ये तरसे हुए हाथ
उनका आँचल है कि रुख़्सार[5] कि पैराहन[6] है
कुछ तो है जिस से हुई जाती है चिलमन रंगीं
जाने उस ज़ुल्फ़ की मौहूम[7] घनी छाओं में
टिमटिमाता है वो आवेज़ा[8] अभी तक कि नहीं
आज फिर हुस्ने-दिलारा की[9] वही धज होगी
वही ख़्वाबीदा सी[10] आँखें वही काजल की लकीर
रंगे-रुख़्सार पे[11] हल्का सा वो ग़ाज़े का ग़ुबार
संदली हाथ पे धुँधली सी हिना की[12] तहरीर[13]
अपने अफ़कार की[14] अशआर की[15] दुनिया है यही
जाने-मज़मूँ[16] है यही शाहिदे-मानी[17] है यही

* काव्य-विषय

१. बुझ रही है २. उदास ३. चाँद के चश्मे से ४. स्पर्श ५. कपोल ६. लिबास ७. भ्रममूलक ८. कान का बुंदा ९. रमणीक सौन्दर्य की १४. स्वप्निल सी ११. कपोलों के रंग पर १२. मेंहदी की १३. चित्रकारी १४. रचनाओं की १५. शेरों की १६. विषय की जान १७. अर्थों का प्रत्यक्षदर्शी या साक्षी

आज तक सुर्खो-सियह सदियों के साये के तले
आदमो-हव्वा की औलाद पे[1] क्या गुज़री है
मौत और ज़ीस्त[2] की रोज़ाना सफ़-आराई में[3]
हम पे क्या गुज़रेगी अजदाद पे[4] क्या गुज़री है
इन दमकते हुए शहरों की फ़रावां[5] मख़लूक़[6]
क्यूं फ़क़त मरने की हसरत में जिया करती है
ये हसीं खेत फटा पड़ता है जोबन जिनका
किस लिए इनमें फ़क़त भूख उगा करती है
ये हर इक सिम्त[7] पुरअसरार[8] कड़ी दीवारें
जल बुझे जिनमें हज़ारों की जवानी के चिराग़
ये हर इक गाम पे[9] उन ख़्वाबों की मक़्तल-गाहें[10]
जिनके परतौ से[11] चिराग़ाँ[12] हैं हज़ारों के दिमाग़
ये भी हैं ऐसे कई और भी मज़मूं[13] होंगे
लेकिन उस शोख़ के आहिस्ता से खुलते हुए होंट
हाय उस जिस्म के क़म्बख़्त दिलावेज़ ख़ुतूत[14]
आप ही कहिये कहीं ऐसे भी अफ़सूं[15] होंगे
अपना मौज़ू-ए-सुख़न इनके सिवा और नहीं
तबए-शाइर का[16] वतन के इन के सिवा और नहीं

◇ ◇ ◇

१- संतान पर २. जीवन ३. संग्राम में ४. पुरखों पर ५. प्रचुर ६. जनता ७. ओर ८. रहस्यपूर्ण ९. पग पर १०. वध-स्थान ११. प्रतिबिम्ब से १२. दीप्तिमान १३. विषय १४. हृदयाकर्षक रेखायें (बनावट) १५. जादू १६. शायर की प्रकृति

◊ ◊

मिरे हमदम मिरे दोस्त

गर मुझे इस का यक़ीं हो मिरे हमदम मिरे दोस्त
गर मुझे इस का यक़ीं हो कि तिरे दिल की थकन
तेरी आंखों की उदासी तिरे सीने की जलन
मेरी दिल-जोई मिरे प्यार से मिट जायेगी
गर मिरा हर्फ़े-तसल्ली[1] वो दवा हो जिस से
जी उठे फिर तेरा उजड़ा हुआ बेनूर दिमाग़
तेरी पेशानी से धुल जायें ये तज़लील के[2] दाग़
तेरी बीमार[3] जवानी को शफ़ा हो जाये
गर मुझे इस का यक़ीं हो मिरे हमदम मिरे दोस्त
मैं तुझे भींच लूं सीने से लगा लूं तुझ को
रोज़ो-शब[4] शामो-सहर[5] मैं तुझे बहलाता रहूँ
मैं तुझे गीत सुनाता रहूं हल्के शीरीं
आबशारों के[6] बहारों के चमन-ज़ारों के[7] गीत
आमदे-सुब्ह के[8] महताब के[9] सय्यारों के[10] गीत
तुझ से मैं हुस्नो-मुहब्बत की हिकायात[11] कहूं

---

१. ढाढ़स के शब्द २. अपमान के ३. रोगी ४. दिन-रात
५. सुब्ह-शाम ६. झरनों के ७. बाग़ों के ८. सुब्ह के आगमन के
९. चाँद के १०. नक्षत्रों के ११. कहानियाँ

कैसे मग़रूर हसीनाओं के बरफ़ाब से जिस्म
गर्म हाथों की हरारत में[1] पिघल जाते हैं
कैसे इक चेहरे के ठहरे हुए मानूस नुक़ूश[2]
देखते - देखते यकलख़्त[3] बदल जाते हैं
किस तरह आरिज़े- महबूब का[4] शफ़्फ़ाफ़ बिलूर[5]
यक-ब-यक बाद-ए-अहमर में[6] दहक जाता है
कैसे गुलचीं[7] के लिए झुकती है ख़ुद शाख़े-गुलाब[8]
किस तरह रात का ऐवान महक जाता है
यूं ही गाता रहूं गाता रहूं तेरी ख़ातिर
गीत बुनता रहूं बैठा रहूं तेरी ख़ातिर
पर मिरे गीत तिरे दुख का मुदावा[9] तो नहीं
नग़्मा जर्राह[10] नहीं मूनिसो - ग़मख़्वार[11] सही
गीत नश्तर तो नहीं मरहमे-आज़ार[12] सही
मेरे आज़ार का चारा नहीं नश्तर के सिवा
और ये सफ़्फ़ाक मसीहा[13] मिरे कब्ज़े में नहीं
इस जहां के किसी ज़ी-रूह के[14] कब्ज़े में नहीं
हां मगर तेरे सिवा तेरे सिवा तेरे सिवा

◇ ◇ ◇

---

१. गर्मी से २. परिचित नैन-नक्श ३. एकाएक ४. प्रेयसी के कपोलों का ५. स्वच्छ कांच ६. शराब की लाली से ७. फूल चुनने वाले ८. गुलाब की शाखा ९. इलाज १०. शल्य चिकित्सक ११. हमदर्द १२. दुख-रूपी घाव की मरहम १३. निर्दयी चिकित्सक १४. प्राणी के

◇ ◇

शाहराह

एक अफ़सुर्दा[1] शाहराह[2] है दराज़[3]
दूर उफ़क़[4] पर नज़र जमाये हुए
सर्द मिट्टी पे अपने सीने के
सुर्मगीं[5] हुस्न को बिछाये हुए
जिस तरह कोई ग़म-ज़दा[6] औरत
अपने वीरां-कदे में[7] महवे-ख़याल[8]
वस्ले-महबूब के[9] तसव्वुर में[10]
मू-ब-मू[11] चूर अज़्व-अज़्व[12] निढाल

◇ ◇ ◇

१. उदास २. राजमार्ग ३. फैला हुआ ४. क्षितिज पर ५. सुरमे के रंग जैसा ६. शोकातुर ७. वीरान घर में ८. चिंताओं में डूबी हुई ९. पिया-मिलन के १०. कल्पना में ११. रोम-रोम १२. अंग-अंग

◇ ◇

लौहो-क़लम

हम परवरिशे - लौहो-क़लम[1] करते रहेंगे
जो दिल पे गुज़रती है रक़म[2] करते रहेंगे
असबाबे-ग़मे-इश्क़[3] बहम[4] करते रहेंगे
वीरानिए - दौरां पे[5] करम[6] करते रहेंगे
हाँ तल्ख़ि - ए - अय्याम[7] अभी और बढ़ेगी
हाँ अहले-सितम[8] मश्क़े-सितम[9] करते रहेंगे
मन्ज़ूर ये तल्ख़ी[10] ये सितम हमको गवारा
दम है तो मुदावा-ए-अलम[11] करते रहेंगे
बाक़ी है लहू दिल में तो हर अश्क से[12] पैदा
रंगे - लबो - रुख़सारे - सनम[13] करते रहेंगे
इक तर्ज़े-तग़ाफ़ुल[14] है सो वो उनको मुबारक
इक अर्ज़े-तमन्ना[15] है सो हम करते रहेंगे

◇ ◇ ◇

१. तख़्ती और क़लम का पालन २. लिखना ३. इश्क़ के ग़म के साधन ४. जुटाना ५. संसार की वीरानी ६. कृपा ७. दिनों (जीवन) की कटुता ८. अत्याचारी ९. अत्याचार करने का अभ्यास १०. कटुता ११. वेदना का इलाज १२. आँसू से १३. प्रेयसी के होंटों और कपोलों का रंग १४. लापरवाई का ढंग १५. इच्छा प्रकट करना

◇ ◇

निसार मैं तिरी गलियों पे…

निसार में तिरी गलियौं पे ऐ वतन कि जहाँ
चली है रस्म कि कोई न सर उठा के चले
जो कोई चाहने वाला तवाफ़ को[१] निकले
नज़र चुराके चले जिस्मो-जां बजाके चले

है अहले-दिल के लिए अब ये नज़्मे-बस्तो-कुशाद[२]
कि संगो-ख़िश्त[३] मुक़य्यद[४] हैं और सग[५] आज़ाद

बहुत है जुल्म के दस्ते-बहाना-जू के[६] लिए
जो चन्द अहले - जुनूँ तेरे नाम-लेवा हैं
बने हैं अहले-हवस[७] मुद्दई भी मुन्सिफ़ भी
किसे वकील करें किससे मुन्सिफ़ी चाहें

मगर गुज़ारने वालों के दिन गुज़रते हैं
तेरे फ़िराक़ में यूँ सुब्हो - शाम करते हैं

बुझा जो रौज़ने-ज़िदां[८] तो दिल ये समझा है
कि तेरी माँग सितारों से भर गई होगी
चमक उठे हैं सलासिल[९] तो हमने जाना है
कि अब सहर[१०] तिरे रुख पर[११] बिखर गई होगी

१. परिक्रमा के लिए २. खोल-बांध की व्यवस्था ३. ईंट पत्थर ४. क़ैद ५. कुत्ते ६. बहाना ढूंढने वाले के हाथ के ७. लोलुप ८. कारागार का झरोखा ९. बेड़ियाँ १०. सुब्ह ११. मुखड़े पर

ग़रज तसव्वुरे - शामो - सहर में[1] जीते हैं
गिरिफ़्ते - साय - ए - दीवारो - दर में[2] जीते हैं
युंही हमेशा उलझती रही है ज़ुल्म से ख़ल्क़[3]
न उनकी रस्म नई है न अपनी रीत नई
युंही हमेशा खिलाये हैं हमने आग में फूल
न उनकी हार नई है न अपनी जीत नई
इसी सबब से फ़लक का गिला नहीं करते
तिरे फ़िराक़ में हम दिल बुरा नहीं करते
गर आज तुझसे जुदा हैं तो कल बहम[4] होंगे
ये रात भर की जुदाई तो कोई बात नहीं
गर आज औज पे[5] है तालए-रक़ीब[6] तो क्या
ये चार दिन की ख़ुदाई तो कोई बात नहीं
ये तुझसे अहदे - वफ़ा उस्तवार[7] रखते हैं
इलाजे - गर्दिशे - लैलो - नहार[8] रखते हैं

◇ ◇ ◇

१. सुबह और शाम की कल्पना में २. दीवारों और दरवाज़ों की सायों की पकड़ में ३. जनता ४. इकट्ठे ५. ऊँचाई पर ६. प्रतिद्वन्द्व का भाग्य ७. प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा को सुदृढ़ ८. रात-दिन के चक्कर का इलाज

◇ ◇

दर्द आयेगा दबे पाँव……

और कुछ देर में जब फिर मिरे तनहा दिल को
फ़िक्र आ लेगी कि तनहाई का क्या चारा करे
दर्द आयेगा दबे पांव लिये सुर्ख़ चिराग़
वो जो इक दर्द धड़कता है कहीं दिल से परे
शोलए - दर्द जो पहलू में लपक उट्ठेगा
दिल की दीवार पे हर नक़्श[1] दमक उट्ठेगा
हल्क़-ए-ज़ुल्फ़[2] कहीं गोश-ए-रुख़सार[3] कहीं
हिज्र का दश्त[4] कहीं गुलशने-दीदार[5] कहीं
लुत्फ़ की बात कहीं प्यार का इक़रार कहीं
दिल से फिर होगी मिरी बात कि ऐ दिल ऐ दिल
ये जो महबूब बना है तिरी तन्हाई का
ये तो महमां है घड़ी भर का चला जाएगा
इससे कब तेरी मुसीबत का मुदावा[6] होगा
मुश्तइल[7] होके अभी उट्ठेंगे वहशी साये
ये चला जायेगा रह जायेंगे बाक़ी साये
रात भर जिन से तिरा ख़ून ख़राबा होगा

१. चित्र २. केशों के घूंघर ३. कपोलों का कोण ४. जंगल ५. दर्शनों का बाग़ ६. इलाज ७. प्रज्वलित

जंग ठहरी है कोई खेल नहीं है ऐ दिल
दुश्मने-जां हैं सभी सारे के सारे क़ातिल
ये कड़ी रात भी ये साये भी तन्हाई भी
दर्द और जंग में कुछ मेल नहीं है ऐ दिल
लाओ सुलगाओ कोई जोशो-ग़ज़ब का[1] अँगार[2]
तैश की[3] आतिशे-जर्रार[4] कहीं से लाओ
वो दहकता हुआ गुलज़ार कहीं से लाओ
जिसमें गर्मी भी है हरकत भी तवनाई[5] भी
हो न हो अपने क़बीले का भी कोई लश्कर
मुन्तज़िर होगा अंधेरे की फ़सीलों के[6] उधर
इनको शोलों के रजज़[7] अपना पता तो देंगे
ख़ैर हम तक न वो पहुँचे भी सदा[8] तो देंगे
दूर कितनी है अभी सुब्ह बता तो देंगे

◇ ◇ ◇

१. उत्तेजना और क्रोध का २. अंगार ३. क्रोध की ४. प्रचंड अग्नि ५. शक्ति ६. शहरपनाहों के ७. वे शेर जो युद्धक्षेत्र में स्वयं पढ़े जाते हैं ८. आवाज़

◇ ◇

याद

दश्ते - तन्हाई में[१] ऐ जाने - जहाँ[२] लर्ज़ाँ[३] हैं
तेरी आवाज़ के साये तिरी होंटों के सराब[४]
दश्ते - तन्हाई में दूरी के ख़सो - ख़ाक[५] तले
खिल रहे हैं तिरे पहलू के समन और गुलाब
उठ रही है कहीं क़ुरबत[६] से तिरी सांस की आंच
अपनी ख़ुशबू में सुलगती हुई मद्धम - मद्धम
दूर उफ़क़[७] पार चमकती हुई क़तरा - क़तरा
गिर रही है तिरी दिलदार नज़र की शबनम
इस क़दर प्यार से ऐ जाने - जहां रक्खा है
दिल के रुख़सार पे[८] इस वक़्त तिरी याद ने हात[९]
यूँ गुमां होता है गरचे है अभी सुब्हे-फ़िराक़[१०]
ढल गया हिज्र का[११] दिन आ भी गई वस्ल की[१२] रात

◇ ◇ ◇

---

१. एकान्त के जंगल में २. संसार के जीवन (प्रेमिका) ३. कम्पायमान ४. मरीचिका ५. कूड़ा-करकट, घास और मिट्टी ६. सामीप्य ७. क्षितिज ८. कपोल पर ९. हाथ १०. विरह की सुबह ११. वियोग १२. मिलन की

◇ ◇

दो इश्क़

(१)

ताज़ा है अभी याद में ऐ साक़ि-ए-गुलफ़ाम[1]
वो अक्से-रुख़े-यार से[2] लहके हुए अय्याम[3]
वो फूल-सी खिलती हुई दीदार की[4] साअ़त[5]
वो दिल-सा धड़कता हुआ उम्मीद का हंगाम[6]
उम्मीद कि लो जागा ग़मे-दिल का नसीबा
लो शौक़ की[7] तरसी हुई शब हो गई आख़िर
लो डूब गये दर्द के बेख़्वाब सितारे
अब चमकेगा बेसब्र निगाहों का मुक़द्दर
इस बाम से निकलेगा तिरे हुस्न का ख़ुरशीद[8]
उस कुंज से फूटेगी किरन रंगे-हिना की[9]
इस दर से बहेगा तिरी रफ़्तार का सीमाब[10]
इस राह पर फूलेगी शफ़क़ तेरी क़बा की[11]

१. फूल जैसे रंग वाला २. प्रेमिका के मुखड़े के प्रतिबिम्ब से ३. दिन (जीवन) ४. दर्शन की ५. क्षण ६. समय ७. इश्क़ की ८. सूरज ९. मेंहदी के रंग की १०. पारा ११. कुर्ते (लिबास) की

फिर देखे हैं वो हिज्र के तपते हुए दिन भी
जब फ़िक्रे-दिलो-जां में फ़ुग़ां भूल गई है
हर शब वो सियह बोझ कि दिल बैठ गया है
हर सुब्ह की लौ तीर-सी सीने में लगी है
तन्हाई में क्या-क्या न तुझे याद किया है
क्या-क्या न दिले-ज़ार ने ढूँडी हैं पनाहें
आँखों से लगाया है कभी दस्ते-सबा को[1]
डाली हैं कभी गर्दने-महताब में[2] बांहें

(२)

चाहा है इसी रंग में लैलाए-वतन को[3]
तड़पा है इसी तौर से[4] दिल उसकी लगन में
ढूँडी है यूँही शौक़ ने[5] आसाइशे-मंज़िल[6]
रुख़्सार के[7] ख़म में[8] कभी काकुल[9] की शिकन[10] में
इस जाने-जहां को भी यूँही क़ल्बो-नज़र ने[11]
हँस-हँस के सदा[12] दी कभी रो-रो के पुकारा
पूरे किये सब हर्फ़े-तमन्ना के[13] तक़ाज़े
हर दर्द को उजियाला हर इक ग़म को संवारा

१. प्रभात समीर के हाथ को २. चाँद की गर्दन में ३. देश-रूपी प्रेमिका को ४. प्रकार ५. इश्क़ ने ६. मंज़िल का सुख ७. कपोलों के ८. वक्रता में ९. केशों १०. बल ११. दिल और नज़र ने १२. आवाज़ १३. अभिलाषा के ।

वापस नहीं फेरा कोई फ़र्मान[1] जुनूं का[2]
तन्हा नहीं लौटी कभी आवाज़ जरस की[3]
ख़ैरीयते - जां[4] राहते - तन[5] सेहते - दामां[6]
सब भूल गईं मसलहतें अहले - हवस की[7]
इस राह में जो सब पे गुज़रती है वो गुज़री
तन्हा पसे - ज़िंदा[8] कभी रुसवा सरे - बाज़ार[9]
गरजे हैं बहुत शेख़ सरे - गोश - ए - मिंबर[10]
कड़के हैं बहुत अहले-हकम[11] बर - सरे - दरबार[12]
छोड़ा नहीं ग़ैरों ने कोई नावके - दुश्नाम[13]
छूटी नहीं अपनों से कोई तर्ज़े - मलामत[14]
इस इश्क़ न उस इश्क़ पे नादिम है मगर दिल
हर दाग़ है इस दिल में बजुज़[15] दाग़े - नदामत[16]

◇ ◇ ◇

१. आदेश २. उन्माद का ३. घड़ियाल की ४. जान की ख़ैरियत ५. तन का सुख ६. बिन फटा दामन ७. लोलुपों की ८. कारागार में ९. बीच बाजार में १०. मस्जिद के चबूतरे से ११. निषेधक १२. बीच दरबार में १३. गालियों के तीर १४. भर्त्सना १५. सिवाय १६. पछतावे का दाग़

◇ ◇

हसीना-ए-ख़याल[1] से

मुझे देदे—
रसीले होंट मासूमाना पेशानी[2] हसीं आँखें
कि मैं इक बार फिर रंगीनियों में ग़र्क़ हो जाऊँ
मिरी हस्ती को[3] तेरी इक नज़र आग़ोश[4] में ले ले
हमेशा के लिए इस दाम[5] में महफ़ूज़[6] हो जाऊँ
ज़िया-ए-हुस्न[7] से ज़ुल्माते-दुनिया[8] में न फिर आऊँ
गुज़िश्ता[9] हसरतों[10] के दाग़ मेरे दिल से धुल जाएँ
मैं आने वाले ग़म की फ़िक्र से आज़ाद हो जाऊँ
मिरे माज़ी-ओ-मुस्तक़बिल[11] सरासर महव[12] हो जाएँ
मुझे वो इक नज़र इक जाविदानी[13] सी नज़र दे दे

(ब्राउनिंग)

◇ ◇ ◇

१. कल्पना-सुन्दरी २. भोलापन लिए हुए माथा ३. अस्तित्व को ४. गोद ५. फन्दे ६. सुरक्षित ७. सौन्दर्य की आभा ८. संसार के अन्धकार ९. पुराने १०. अतृप्त अभिलाषाओं ११. भूत व भविष्य १२. विस्मृत १३. अमर

◇ ◇

......तुम्हारे हुस्न के नाम

सलाम लिखता है शाइर तुम्हारे हुस्न के नाम
बिखर गया जो कभी रंगे-पैरहन[1] सारे-बाम[2]
निखर गई है कभी सुब्ह दोपहर कभी शाम
कहीं जो क़ामते-ज़ेबा पे[3] सज गई है क़बा[4]
चमन में सर्वो-सनोबर[5] संवर गये हैं तमाम
बनी बिसाते-ग़ज़ल[6] जब डुबो लिये दिल ने
तुम्हारे साय-ए-रुख़्सारो-लब में[7] साग़रो-जाम
सलाम लिखता है शाइर तुम्हारे हुस्न के नाम
तुम्हारे हात पे[8] है ताबिशे-हिना[9] जब तक
जहां में बाक़ी है दिलदारि-ए - उरूसे - सुख़न[10]
तुम्हारा हुस्न जवां है तो मेहरबां है फ़लक[11]
तुम्हारा दम है तो दमसाज़[12] है हवा-ए-वतन[13]
अगरचे तंग हैं औक़ात[14] सख़्त हैं आलाम[15]
तुम्हारी याद से शीरीं[16] है तल्ख़ि-ए-अय्याम[17]
सलाम लिखता है शाइर तुम्हारे हुस्न के नाम

◇ ◇

---

१. लिबास का रंग २. छत पर ३. हृदयाकर्षक क़द (शरीर) पर ४. कुर्ता (लिबास) ५. वृक्षों के नाम ६. ग़ज़ल बन गई ७. कपोलों और होंटों की छाया में ८. हाथ पर ९. मेंहदी की आभा १०. कविता रूपी दुल्हन की दिलदारी ११. आकाश १२. मित्र १३. देश की हवा १४. समय १५. दुख १६. मधुर १७. जीवन की कटुता

◇ ◇

हुस्न और मौत

जो फूल सारे गुलिस्ताँ में सबसे अच्छा हो
फ़रोग़े-नूर[1] हो जिससे फ़िज़ाए-रंगीं[2] में
ख़िज़ां[3] के जौरो-सितम[4] को न जिसने देखा हो
बहार ने जिसे ख़ूने - जिगर से पाला हो
वो एक फूल समाता है चश्मे-गुलचीं[5] में
हज़ार फूलों से आबाद बाग़े - हस्ती[6] है
अजल[7] की आँख फ़क़त एक को तरसती है
कई दिलों की उमीदों का जो सहारा हो
फ़िज़ा-ए-दहर की आलूदगी[8] से बाला[9] हो
जहाँ में आके अभी जिसने कुछ न देखा हो
न क़हते-ऐशो-मुसर्रत[10] न ग़म की अरज़ानी[11]
किनारे-रहमते-हक़[12] में उसे सुलाती है
सुकूते-शब[13] में फ़रिश्तों की मर्सिया ख़्वानी[14]
तवाफ़[15] करने को सुब्हे-बहार आती है
सबा[16] चढ़ाने को जन्नत के फूल लाती है

◇ ◇ ◇

---

१. प्रकाश में बढ़ोतरी २. रंगीन वातावरण ३. पतझड़ ४. अत्याचार और क्रूरता ५. फूल चुनने वाली की दृष्टि में ६. जीवन-रूपी उद्यान ७. मृत्यु, यमदूत ८. सृष्टि के वातावरण की लिप्ति ९. ऊपर (निर्लिप्त) १०. ऐश्वर्य एवं सुख की कमी ११. दुखों की बहुलता १२. ईश्वर की कृपा को प्रदान करती हैं १३. रात्रि की निस्तब्धता १४. शोक-गीत १५. परिक्रमा १६. प्रभात-समीर

◇ ◇

इन्तेज़ार

गुज़र रहे हैं शबो-रोज़[1] तुम नहीं आतीं
रियाज़े-ज़ीस्त[2] है आर्ज़ुद-ए-बहार[3] अभी
मिरे ख़याल की दुनिया है सोगवार[4] अभी
जो हसरतें[5] तिरे ग़म की कफ़ील[6] हैं प्यारी
अभी तलक मिरी तन्हाइयों में बसती हैं
तवील[7] रातें अभी तक तवील हैं प्यारी
उदास आँखें अभी इन्तेज़ार करती हैं
बहारे-हुस्न[8] पे पाबन्दी-ए-जफ़ा[9] कब तक
ये आज़माइशे - सब्रे-गुरेज़े-पा[10] कब तक
क़सम तुम्हारी बहुत ग़म उठा चुका हूँ मैं
ग़लत था दाव-ए-सब्रो-शकेब[11] आ जाओ
क़रारे - ख़ातिरे - बेताब थक गया हूँ मैं

◇ ◇ ◇

---

१. रात-दिन २. जीवन का उद्यान ३. वसन्त-ऋतु से वंचित ४. शोक पूर्ण ५. अतृप्त आकाँक्षाएँ ६. ज़मानत ७. लम्बी ८. सौन्दर्य की वसन्त-ऋतु ९. अत्याचारों का बन्धन १०. (संघर्ष से) बचने की इच्छा रखने वाले धैर्य की परीक्षा ११. धैर्य और सहन-शक्ति का दावा

◇ ◇

मेरे नदीम[1]...

ख़यालो-शेर[2] की दुनिया में जान थी जिन से
फ़िज़ाए-फ़िक्रो-अमल[3] अरग़वान[4] थी जिन से
वो जिनके नूर[5] से शादाब[6] थे महो-अंजुम[7]
जुनूने-इश्क़ की हिम्मत जवान थी जिन से
वो आर्ज़ूएं[8] कहाँ सो गई हैं मेरे नदीम

वो नासुबूर[9] निगाहें वो मुन्तज़िर राहें
वो पासे-ज़ब्त[10] से दिल में दबी हुई आहें
वो इन्तेज़ार की रातें तवील[11] तीरा-ओ-तार[12]
वो नीम-ख़्वाब शबिस्ताँ[13] वो मख़मली बांहें
कहानियाँ थीं कहीं खो गई हैं मेरे नदीम

मचल रहा है रगे-ज़िन्दगी में ख़ूने-बहार
उलझ रहे हैं पुराने ग़मों से रूह के तार
चलो कि चलके चिराग़ां[14] करें दयारे-हबीब[15]
हैं इन्तेज़ार में अगली[16] मुहब्बतों के मज़ार[17]
मुहब्बतें जो फ़ना[18] हो गई हैं मेरे नदीम

◇ ◇ ◇

---

१. मित्र, साथी २. विचार और काव्य ३. विचार और कर्म का वातावरण ४. लाल (रंगीन) ५. ज्योति ६. आप्लावित, परिपूर्ण ७. चाँद और तारे ८. आकांक्षाएँ ९. बेचैन, अधीर १० सहन करने का लिहाज़ ११, लम्बी १२. अन्धकारपूर्ण १३. अर्ध-जाग्रत शयनागार १४. दीप-मालिका १५. प्रिय मित्र के घर १६. पहली, पुरानी १७. प्रेम की समाधियाँ १८. विनष्ट

◇ ◇

मर्ग-सोज़े-मुहब्बत[१]

आओ कि मर्गे-सोज़े-मुहब्बत मनाएँ हम
आओ कि हुस्ने-माह[२] से दिल को जलाएँ हम
खुश हो फ़िराक़े-क़ामतो-रुख़्सारे-यार[३] से
सर्वो-गुलो-समन[४] से नज़र को सताएँ हम
वीरानि-ए-हयात को[५] वीरानतर[६] करें
ले नासेह[७] ! आज तेरा कहा मान जाएँ हम
फिर ओट लेके दामने-अब्रे-बहार की[८]
दिल को मनाएं हम कभी आँसू बहाएं हम
सुलझाएं बेदिली से ये उलझे हुए सवाल
वाँ जाएं या न जाएं न जाएं कि जाएं हम
फिर दिल को पासे-ज़ब्त[९] की तलक़ीन[१०] कर चुकें
और इम्तहाने-ज़ब्त[११] से फिर जी चुराएँ हम
आओ कि आज ख़त्म हुई दास्ताने-इश्क़[१२]
अब ख़त्मे-आशिक़ी[१३] के फ़साने[१४] सुनाएं हम

◇ ◇ ◇

---

१. प्रेम की जलन की मृत्यु (अन्त) २. चन्द्रमा के सौन्दर्य ३. प्रेयसी के कपोलों और लम्बे क़द के वियोग से ४. सर्व नामक पेड़ (जिससे ऊँचे क़द की उपमा दी जाती है) तथा फूल (जिनसे कपोलों की उपमा दी जाती है) ५. जीवन की वीरानी को ३. और अधिक वीरान ७. उपदेशक ८. वसन्त ऋतु के बादल के पल्ले की ६. सहन करने की परिपाटी १०. उपदेश ११. धैर्य की परीक्षा १२. प्रेम की कहानी १३, वह प्रेम जो समाप्त हो चुका है १४. कहानियाँ

◇ ◇

शीशों का मसीहा[1] कोई नहीं !

मोती हो कि शीशा जाम[2] कि दर[3]
जो टूट गया सो टूट गया
कब अश्कों से[4] जुड़ सकता है
जो टूट गया सो छूट गया

तुम नाहक़ टुकड़े चुन - चुन कर
दामन में छुपाये बैठे हो
शीशों का मसीहा कोई नहीं
क्या आस लगाये बैठे हो

शायद कि इन्हीं टुकड़ों में कहीं
वो साग़रे - दिल[5] है जिसमें कभी
सद नाज़ से[6] उतरा करती थी
सहबाए - ग़मे - जानां की[7] परी

फिर दुनिया वालों ने तुम से
ये साग़र लेकर फोड़ दिया
जो मै थी बहा दी मिट्टी में
मेहमान का शह-पर[8] तोड़ दिया

---

१. हज़रत मसीह (बीमारों को अच्छा और मुर्दों को जीवित करने वाला) २. शराब का प्याला ३ दरवाजा ४. आँसुओं से ५. हृदय-रूपी शराब का प्याला ६. बड़े गर्व से ७. प्रेयसी के ग़म की शराब की ८. सब से बड़ा और मजबूत पंख

ये रंगीं रेज़े[1] हैं शाहिद
उन शोख़ बिलूरी सपनों के
तुम मस्त जवानी में जिन से
ख़लवत को[2] सजाया करते थे

नादारी[3] दफ़्तर भूख और ग़म
इन सपनों से टकराते रहे
बेरहम था चौमुख पथराओ
ये कांच के ढांचे क्या करते

या शायद इन ज़र्रों में कहीं
मोती है तुम्हारी इज़्ज़त का
वो जिस से तुम्हारी इज्ज़ पे भी
शमशाद-क़दों ने[4] रश्क[5] किया

इस माल की धुन में फिरते थे
ताजिर भी बहुत रहज़न[6] भी बहुत
है चोर नगर याँ मुफ़लिस की
गर जान बची तो आन गई

ये साग़रो-शीशे लालो-गुहर
सालिम हों तो क़ीमत पाते हैं
यूं टुकड़े-टुकड़े हों तो फ़क़त
चुभते हैं लहू रुलवाते हैं

१. रंगीन टुकड़े २. एकांत या शयनागार को ३. दरिद्रता
४. शमशाद नामक वृक्ष के समान ऊँचे क़द वालों ने ५. ईर्ष्या ६. डाकू

तुम नाहक़ शीशे चुन - चुन कर
दामन में छुपाये बैठे हो
शीशों का मसीहा कोई नहीं
क्या आस लगाये बैठे हो

यादों के गरेबानों के रफ़ू
पर दिल की गुज़र कब होती है
इक बख़िया उधेड़ा इक सीया
यूं उम्र बसर कब होती है

इस कारगहे - हस्ती में[१] जहाँ
ये साग़र शीशे ढलते हैं
हर शै का बदल मिल सकता है
सब दामन पुर हो सकते हैं

जो हाथ बढ़े यावर[२] है यहाँ
जो आँख उठे वो बख़्तावर[३]
यां धन दौलत का अन्त नहीं
हों घात में डाकू लाख मगर

कब लूट - झपट से हस्ती की
दूकानें ख़ाली होती हैं
यां परबत - परबत हीरे हैं
यां सागर - सागर मोती हैं

१. संसार में २. सहायक ३. भाग्यवान

कुछ लोग हैं जो इस दौलत पर
पर्दे लटकाते फिरते हैं
हर परबत को हर सागर को
नीलाम चढ़ाते फिरते हैं

कुछ वो भी हैं जो लड़ - भिड़ कर
ये पर्दे नोच गिराते हैं
हस्ती के उठाईगीरों की
हर चाल उलझाये जाते हैं

इन दोनों में रन[1] पड़ता है
नित बसती - बसती नगर - नगर
हर बसते घर के सीने में
हर चलती राह के माथे पर

ये कालक भरते फिरते हैं
वो जोत जगाते रहते हैं
ये आग लगाते फिरते हैं
वो आग बुझाते रहते हैं

सब सागर शीशे लालो - गुहर
इस बाज़ी में बद जाते हैं
उट्ठो सब ख़ाली हाथों को
इस रन से बुलावे आते हैं

◇ ◇ ◇

१. रण (संघर्ष)

◇ ◇

अंजाम[1]

हैं लबरेज़[2] आहों से ठंडी हवाएँ
उदासी में डूबी हुई हैं घटाएँ
मुहब्बत की दुनिया पे शाम आ चुकी है
सियह-पोश[3] हैं ज़िन्दगी की फ़िज़ाएँ[4]
मचलती हैं सीने में लाख़ आरज़ूएँ[5]
तड़पती हैं आँखों में लाख इल्तजाएँ[6]
तग़ाफ़ुल[7] के आग़ोश[8] में सो रहे हैं
तुम्हारे सितम[9] और मेरी वफ़ाएँ
मगर फिर भी ऐ मेरे मासूम[10] क़ातिल[11]
तुम्हें प्यार करती हैं मेरी दुआएं

◇ ◇ ◇

१. अन्त, परिणाम २. भरी हुई ३. अन्धकारपूर्ण ४. जीवन का वातावरण ५. अभिलाषाएँ ६. आत्म-निवेदन ७. उदासीनता ८. गोद ९. अत्याचार १०. अबोध ११. हत्यारे

◇ ◇

कोई आशिक़ किसी महबूबा से

याद की राहगुज़र जिस पे इसी सूरत से
मुद्दतें बीत गई हैं तुम्हें चलते-चलते
ख़त्म हो जाये जो दो-चार क़दम और चलो
मोड़ पड़ता है जहां दश्ते-फ़रामोशी का[1]
जिससे आगे न कोई मैं हूं न कोई तुम हो
साँस थामे हैं निगाहें कि न जाने किस दम
तुम पलट जाओ गुज़र जाओ या मुड़कर देखो
गर्चे वाक़िफ़ हैं निगाहें कि ये सब धोखा है
गर कहीं तुमसे हम-आग़ोश[2] हुई फिर से नज़र
फूट निकलेगी वहाँ और कोई राहगुज़र[3]
फिर उसी तरह जहां होगा मुक़ाबिल पैहम[4]
साय-ए-ज़ुल्फ़ का[5] और जुंबिशे-बाज़ू का[6] सफ़र
दूसरी बात भी झूठी है कि दिल जानता है
यां कोई मोड़ कोई दश्त कोई घात नहीं
जिसके पर्दे में मिरा माहे-रवां[7] डूब सके
तुमसे चलती रहे ये राह यूंही अच्छा है
तुमने मुड़कर भी न देखा तो कोई बात नहीं

◇ ◇

---

१. विस्मृति के जंगल का २. आलिंगन-बद्ध ३. मार्ग ४. निरंतर सामना ५. केशों की छाया ६. बांहों के हिलने-डुलने का ७. गतिशील चांद

◇ ◇

नज्रे ग़ालिब[1]

किसी गुमाँ[2] पे तवक़्क़ो[3] ज़ियादा रखते हैं
फिर आज कू-ए-बुतां का[4] इरादा रखते हैं
बहार आएगी जब आएगी ये शर्त नहीं
कि तश्ना-काम[5] रहें गर्चे बादा[6] रखते हैं
तिरी नज़र का गिला क्या ? जो है गिला दिल को
तो हम से है कि तमन्ना[7] ज़ियादा रखते हैं
नहीं शराब से रंगीं तो ग़र्क़े-ख़ूँ हैं कि हम
ख़याले - वज़ए - क़मीसो - लबादा रखते हैं
ग़मे-जहां[8] हो ग़मे-यार हो[9] कि तीरे-सितम[10]
जो आए आए कि हम दिल कुशादा[11] रखते हैं
जवाब वाइज़े-चाबुक-ज़ुबां[12] में 'फ़ैज़' हमें
यही बहुत है जो दो हर्फ़े-सादा रखते हैं

◇ ◇ ◇

१. यह ग़ज़ल महाकवि 'ग़ालिब' की एक ग़ज़ल के ढंग पर कही गई है, इसलिए 'फ़ैज़' ने इसे ग़ालिब को 'भेंट' किया है। २. भ्रम ३. प्रत्याशा ४. प्रेयसी की गली में जाने का ५. तृषित ६. शराब ७. अभिलाषा ८. सांसारिक चिन्ताएँ ९. प्रेयसी-सम्बन्धी चिन्ता १०. अत्याचार का तीर ११. खुला हुआ, विशाल १२. तेज़ (तीखा) बोलने वाला उपदेशक

◇ ◇

[नज़्रे-सौदा][1]

फ़िक्रे - दिलदारि - ए - गुलज़ार[2] करूँ या न करूँ
ज़िक्रे - मुर्ग़ाने - गिरिफ़्तार[3] करूँ या न करूँ
क़िस्स - ए - साज़िशे - अग़ियार[4] कहूँ या न कहूँ
शिकव - ए- यारे - तरह़दार[5] करूँ या न करूँ
जाने क्या वज़अ़[6] है अब रस्मे-वफ़ा[7] की ऐ दिल
वज़अ़ - ए - देरीना पे[8] इसरार[9] करूँ या न करूँ
यूं बहार आई है इस साल[10] कि गुलशन में सबा[11]
पूछती है गुज़र[12] इस बार करूँ या न करूँ
गोया[13] इस सोच में है दिल में लहू भरके गुलाब
दामनो - जेब को गुलनार[14] करूँ या न करूँ
है फ़क़त मुर्ग़े - ग़ज़ल-ख़्वां[15] कि जिसे फ़िक्र नहीं
मोत - दिल[16] गर्मि - ए-गुफ़्तार[17] करूँ या न करूँ

◇ ◇ ◇

---

१. यह ग़ज़ल उर्दू के विख्यात प्राचीन कवि 'सौदा' की एक ग़ज़ल के ढंग पर लिखी गई है, इसलिए 'फ़ैज़' ने इसे 'सौदा' को भेंट किया है। २. देश-रूपी उद्यान की देख-भाल की चिन्ता ३. बन्दी पक्षियों की चर्चा ४. शत्रुओं के षड्यन्त्र की कहानी ५. रंगीले यार की शिकायत ६. रीति ७. प्रेम निभाने की परिपाटी ८. प्राचीन प्रणाली ९. आग्रह १०. इस साल ११. प्रभात-समीर १२. प्रवेश १३. मानो १४. पुष्पित, रंगीन १५. गाने वाला पक्षी १६. हल्की नरम, सह्य १७. बात की गर्मी को

◇ ◇

इन्तेहा-ए-कार*

पिन्दार[1] के ख़ूगर[2] को
नाकाम भी देखोगे
आग़ाज़[3] से वाक़िफ़ हो
अंजाम[4] भी देखोगे
रंगीनि-ए-दुनिया से मायूस सा हो जाना
दुखता हुआ दिल लेकर तन्हाई में खोजाना
तरसी हुई नज़रों को
हसरत से झुका लेना
फ़रियाद के टुकड़ों को
आहों में छुपा लेना
रातों की ख़मोशी में छुप कर कभी रो लेना
मजबूर जवानी के मलबूस[5] को धो लेना
जज़्बात[6] की वुसअत[7] को
सज्दों से बसा लेना
भूली हुई यादों को सीने से लगा लेना

◇ ◇ ◇

* कार्य की पराकाष्ठा १. अभिमान २. अभ्यस्त ३. आरम्भ ४. अन्त ५. वस्त्र ६ भावनायें ७ विस्तार

◇ ◇

सुरूदे-शबाना*

गुम है इक कैफ़ में फ़िज़ा-ए-हयात[1]
ख़ामुशी सज्द-ए-नियाज़[2] में है
हुस्ने-मासूम[3] ख्वाबे-नाज़[4] में है
ऐ कि तू रंगो-बू का तूफ़ाँ है
ऐ कि तू जल्वागर बहार में है
ज़िन्दगी तेरे इख़्तियार में है
फ़ूल लाखों बरस नहीं रहते
दो घड़ी और है बहारे-शबाब[5]
आ कि कुछ दिल की सुन सुनालें हम
आ मुहब्बत के गीत गा लें हम
मेरी तन्हाइयों पे शाम रहे
हसरते-दीद[6] नातमाम रहे
दिल में बेताब है सदा-ए-हयात
आँख गौहर निसार करती है
आसमाँ पर उदास हैं तारे
चाँदनी इन्तेज़ार करती है
आ कि थोड़ा सा प्यार करलें हम
ज़िन्दगी ज़र निगार[7] करलें हम

---

*रात्रि का गीत

१. जीवन का वातावरण २. विनय का सज्दा ३. निरीह सौन्दर्य ४. प्रेमिका का सपना ५. यौवन का वसन्त ६. देखने की उत्कण्ठा ७. सुनहरी

◇ ◇

बादज़ वक्त*

दिल को एहसास से दो - चार न कर देना था
साज़े - ख़्वाबीदा[1] को बेदार न कर देना था
अपने मासूम तबस्सुम की फ़रावानी[2] को
वुसअ़ते - दीद[3] पे गुलनार न कर देना था
शौक़े - मजबूर[4] को बस एक झलक दिखला कर
वाक़िफ़े - लज़्ज़ते - तकरार[5] न कर देना था
चश्मे - मुश्ताक़[6] की ख़ामोश तमन्नाओं को
यकबयक माइले - गुफ़्तार न कर देना था
जल्व - ए - हुस्न[7] को मस्तूर[8] ही रहने दे
हसरते - दिल को गुनहगार न कर देना था

◇ ◇ ◇

*समय के बाद

१. सोये हुए साज़ २. बहुलता ३. दृष्टि का विस्तार ४. विवश उत्सुकता ५. झगड़े के स्वाद से परिचित ६. उत्सुक नेत्र ७. सौन्दर्य का प्रदर्शन ८. छिपा हुआ

◇ ◇

सुरूदे–शबाना

नीम शब चाँद ख़ुद फ़रामोशी[१]
महफ़िले - हस्तो - बूद[२] वीराँ है
पैकरे - इल्तिजा[३] है ख़ामोशी
बज़्मे - अंजुम फ़सुर्दा - सामाँ[४] है
आबशारे - सुकूत[५] जारी है
चार सू[६] बे ख़ुदी सी तारी है
ज़िन्दगी जुज़्वे - ख़्वाब[७] है गोया
सारी दुनिया सराब[८] है गोया
सो रही है घने दरख़्तों पर
चाँदनी की थकी हुई आवाज़
कहकशाँ[९] नीमवा[१०] निगाहों से
कह रही है हदीसे - शौक़े - नियाज़[११]
साज़े दिल के ख़मोश तारों से
छन रहा है ख़ुमारे - कैफ़आगीं[१२]
आरज़ू ख़्वाब तेरा रू-ए-हसीं[१३]

◇ ◇ ◇

१. विस्मरण २.अतीत तथा वर्तमान की सभा ३. उत्कण्ठा का चित्र ४.मुर्झाई हुई ५. निस्तब्धता का झरना ६. चारों ओर ७. स्वप्न का अंश ८. मरीचिका ९. आकाशगंगा १०. अर्धमीलित ११. दर्शनभिलाषा का किस्सा १२. मस्ती और खुमार १३. सुन्दर मुखड़ा

◇ ◇

तहे-नुजूम

तहे - नुजूम कहीं चाँदनी के दामन में
हुजूमे-शौक़ से इक दिल है बेक़रार अभी
ख़ुमारे-ख़्वाब[२] से लबरेज़ एहमरीं[३] आँखें
सफ़ेद रुख़ पे परीशान अम्बरीं आँखें[४]
छलक रही है जवानी हर इक बुने - मू[५] से
रवाँ हो बर्गे-गुले-तर[६] हो जैसे सैले-शमीम[७]
ज़िया-ए-मह[८] में दमकता है रंगे - पैराहन
अदाए-इज्ज़[९] से आँचल उड़ा रही है नसीम
दराज़ कद की लचक से गुदाज़ पैदा है
अदा-ए-नाज़[१०] से रंगे - नियाज़[११] पैदा है
उदास आँखों में ख़ामोश इल्तेजाएँ हैं
दिले-हज़ीं[१२] में कई जाँ-बलब दुआएँ हैं
तहे - नुजूम कहीं चाँदनी के दामन में
किसी का हुस्न है मसरूफ़े-इन्तेज़ार[१३] अभी
कहीं ख़याल के आबाद कर्दा गुलशन में
है एक गुल कि है नावाक़िफ़े - बहार[१४] अभी

◇ ◇ ◇

१. उत्सुकता का ढेर २. स्वप्न का खुमार ३. लाल ४. सुगंधित नेत्र ५. रोम ६. सजल पुष्प की पँखड़ी ७. सुरभि-प्रवाह ८. चंद्रमा की आभा ९. विनय-ढंग १०. प्रेमिका की अदा ११. विनय का ढंग १२. घायल हृदय १३. प्रतीक्षा में मग्न १४. वसंत से अपरिचित

◇ ◇

तीन मंज़र

तसव्वुर*

शोखियाँ मुज़्तर निगाहे - दाद - ए - सरशार में[1]
इशरतें ख्वाबीदा रंगे - ग़ाज़ - ए - रुख़्सार[2] में
सुर्ख़ होंटो पर तबस्सुम की ज़ियाएँ जिस तरह
यासमिन[3] के फ़ूल डूबे हों म-ए-गुलनार में

सामना

छनती हुई नज़रों से जज़्बात की दुनिया में
बे ख्वाबियाँ अफ़साने महताब तमन्नाएँ
कुछ उलझी हुई बातें कुछ बहके हुए नग़मे
कुछ अश्क जो आँखों से बे वज्ह छलक जायें

रुख़्सत

फ़सुर्दा[4] रुख़ लबों पर इक नियाज़-आमेज़[5] ख़ामोशी
तबस्सुम मुज़महिल[6] था मरमरीं हाथों में लरज़िश थी[7]
वो कैसी बेकसी थी तेरी पुरतमकीं[8] निगाहों में
वो क्या दुख था तिरी सहमी हुई ख़ामोश आहों में

◇ ◇ ◇

*कल्पना

१. मस्त निगाहें २. कपोलों के ग़ाज़े का रंग ३. चमेली ४. बुझा हुआ मुख ५. प्रेमपूर्ण ६. मुर्झाया हुआ ७. कंपन ८. घमंडी

◇ ◇

सुरूद*

मौत अपनी न अमल अपना न जीना अपना
खोगया शोरिशे - गेती[१] में क़रीना[२] अपना
नाख़ुदा[३] दूर हवा तेज़ करीं कामे निहंग[४]
वक़्त है फेंक दे लहरों में सफ़ीना[५] अपना
अर्स - ए - दहर[६] के हंगामे तहे - ख़्वाब[७] सही
गर्म रख आतिशे - पैकार[८] से सीना अपना
साक़िया रंज न कर जाग उठेगी महफ़िल
और कुछ देर उठा रखते हैं पीना अपना
बेश क़ीमत हैं ये ग़म हाए - मुहब्बत[९] मत भूल
ज़ुल्मते - यास[१०] को मत सौंप ख़ज़ीना अपना

◇ ◇ ◇

*संगीत

१. पृथ्वी का उपद्रव २. अनुमान ३. केवट ४. मगर के दाँत ५. नाव ६. दुनिया का मैदान ७. स्वप्न के नीचे ८. युद्ध की अग्नि ९. प्रेम के दुख १०. निराशा का अंधकार

◇ ◇

यास

बरबते - दिले के तार टूट गये
हैं ज़मीं बोस राहतों के महल
मिट गये क़िस्सा हाए - फ़िक्रे - अमल[2]
बज़्मे - हस्ती के जाम फूट गये
छिन गया कैफ़े - कौसरो-तसनीम[3]
ज़हमते - गिरिया - ओ - बक़ा[4] बे सूद
शिकव - ए - बख़्ते - ना रसा[5] बे सूद
हो चुका ख़त्म रहमतों का नुज़ूल[6]
बन्द है मुद्दतों से बाबे - क़ुबूल[7]
बे नियाज़े - दुआ[8] है रब्बे - करीम[9]
बुझ गई शमए - आर्ज़ू - ए - जमील[10]
याद बाक़ी है बेकसी की दलील
इन्तेज़ारे - फ़िज़ूल[11] रहने दे
राज़े - उल्फत निवाहने वाले
बारे ग़म से कराहने वाले
काविशे - बेहुसूल[12] रहने दे

◇ ◇ ◇

. मन का बांध २. कर्म की चिंता का क़िस्सा ३. स्वर्ग की नहरों का नशा ४. रोने धोने का कष्ट ५. दुर्भाग्य की शिकायत ६. अवतरण ७. स्वीकृति द्वार ८. दुआ से बेखबर ९. कृपालु भगवान १०. सुन्दर उमंग की शम्अ ११. व्यर्थ प्रतिश्ति १२. विफल प्रयत्न

◇ ◇

एक रह गुज़र पर

वो जिसकी दीद में लाखों मसर्रतें[१] पिन्हाँ[२]
वो हुस्न जिसकी तमन्ना में जन्नतें पिन्हाँ
हज़ार फ़ितने तहे - पाए[३] - नाज़ ख़ाकनशीं[४]
हर इक निगाह ख़ुमारे - शबाब[५] से रंगीं
शबाब जिससे तख़य्युल[६] पे बिजलियाँ बरसें
वक़ार[७] जिसकी रिफ़ाकत[८] को शोख़ियाँ तरसें
अदा - ए - लग़्ज़िशे - पा[९] पर क़यामतें क़ुरबाँ
बयाज़[१०] रुख़ पे सहर की सबाहतें[११] क़ुरबाँ
सियाह ज़ुल्फ़ों में वारफ़्ता नकहतों[१२] का हुजूम
तवील रातों की ख़्वाबीदा राहतों का हुजूम
वो आँख जिसके बनाव पे ख़ालिक[१३] इतराये
ज़ुबाने - शेर को तारीफ़ करते शर्म आये
वो होंट फ़ैज़ से जिनके बहार लाला फ़रोश[१४]
बहिश्तो - कौसरो - तसनीमो[१५] - सलसबील बदोश
गुदाज़ जिस्म क़बा जिस पे सज के नाज़ करे
दराज़ क़द जिसे सर्वे सही नवाज़[१७] करे

१. हर्ष २. छिपे हुए ३. प्रेमिका के पैरों के नीचे ४. धूल में मिले हुए ५. यौवन का उन्माद ६. कल्पना ७. प्रतिष्ठा ८. मैत्री ९. पैर की फिसलन की अदा १०. श्वेत मुख ११. सफ़ेदी सौन्दर्य १२. खोई हुई सुगंध १३. सृष्टा १४. फूल बिखेरना १५. सर्ग तथा उसकी नहरें १६. नहर विशेष १७. नतमस्तक हो

ग़रज़ वो हुस्न जो मुहताजे - वस्फ़ो - नाम[१] नहीं
वो हुस्न जिसका तसव्वुर बशर का काम नहीं
किसी ज़माने में इस रह गुज़र से गुज़रा था
बसद ग़ुरूरो - तजम्मुल[२] इधर से गुज़रा था
और अब ये राह गुज़र भी है दिल फ़रेबो - हसीं
है इसकी ख़ाक में कैफ़े - शराबो - शेर - मकीं[३]
हवा में शोख़िए - रफ़्तार की अदाएँ हैं
फ़िज़ा में नर्मिए - ए - गुफ़्तार की सदाएँ हैं
गरज़ वो हुस्न अब इस जा का जुज़्वे - मंज़र[४] है
नियाज़े - इश्क़ को इक सज्दा - गह मयस्सर है

◇ ◇ ◇

१. ख्याति तथा प्रशंसा २. अभिमान तथा ऐश्वर्य ३. मन्दिर तथा कविता का नशा निवास करता है ४. दृश्य का अंग

◇ ◇

इक़बाल

आया हमारे देस में इक खुशनवा[१] फ़कीर
आया और अपनी धुन में ग़ज़लख़्वाँ[२] गुज़र गया
सनसान राहें ख़ल्क़ से आबाद होगईं
वीरान मैकदों का नसीबा सँवर गया
थीं चन्द ही निगाहें जो उस तक पहुँच सकीं
पर उसका गीत सबके दिलों में उतर गया
अब दूर जा चुका है वो शाहे-गदानुमा[३]
और फिर से अपने देस की राहें उदास हैं
चन्द इक को याद है कोई उसकी अदा-ए-ख़ास
दो-इक निगाहें चन्द अज़ीज़ों के पास हैं
पर उसका गीत सबके दिलों में मुक़ीम[४] है
और उसकी लै से सैंकड़ों लज़्ज़त-शनास[५] हैं
इस गीत के तमाम महासिन[६] हैं लाज़वाल[७]
इसका वफ़ूर[८] इसका ख़रोश[९] इसका सोज़ो-साज़[१०]
ये गीत मिस्ले-शोला ज्वाला तुन्दो-तेज़
इसकी लपक से बादे-फ़ना[११] का जिगर गुदाज़
जैसे चिराग़ वहशते-सरसर[१२] से बे ख़तर
या शम्अ बज़्मे-सुब्ह की आमद से बे निगाज़

◇ ◇ ◇

१. मृदुभाष २. ग़ज़ल सुनाने वाला ३. भिखारी के वेश में सम्राट ४. निवासी ५. स्वाद से परिचित ६. गुण ७. अजर-अमर ८. बाहुल्य ९. उत्साह १०. जलन तथा बाजा ११. विनाश का समीर १२. झक्कड़ की प्रचण्डता

◇ ◇

हम लोग

दिल के ऐवाँ[1] में लिये गुलशुदा शम्ओं की क़तार
नूरे-खुरशीद से सहमे हुए उकताये हुए
हुस्ने-महबूब के सैयाल[2] तसव्वुर की तरह
अपनी तारीकी को भींचे हुए लिपटाये हुए
ग़ायते सूदो - ज़ियाँ[3] सूरते - आग़ाज़ो - मआल
वही बेसूद तजस्सुस[4] वही बेकार सवाल
मुज़महिल साअते-इमरोज़[5] की बे रंगी से
यादे-माज़ी से ग़मीं[6] दहशते-फ़र्दा[7] से निढाल
तश्ना अफ़कार[8] जो तिस्कीन नहीं पाते हैं
सोख़्ता अश्क जो आँखों में नहीं आते हैं
इक कड़ा दर्द कि जो गीत में ढलता ही नहीं
दिल के तारीक शिगाफ़ों से निकलता ही नहीं
और इक उलझी हुई मौहूम सी दरमाँ की तलाश
दश्तो-ज़िन्दाँ की हवस चाक गरेबाँ की तलाश

◇ ◇ ◇

---

१. महल २. प्रवाहितकल्पना ३. नफ़ा-नुक़्सान ४. तलाश
५. आज की घड़ी ६. प्रतीत की स्मृति से दुखी ७. कल का भय
८. अतृप्त विचार

◇ ◇

सियासी लीडर के नाम

सालहा साल ये बे आसरा जकड़े हुए हात
रात के सख़्तो - सियह सीने में पैवस्त रहे
जिस तरह तिनका समन्दर से हो सर गर्मे-सितेज़[1]
जिस तरह तीतरी कुहसार[2] पे यलग़ार[3] करे
और अब रात के संगीनो - सियह सीने में
इतने घाव हैं कि जिस सिम्त नज़र जाती है
जा - ब - जा नूर ने इक जाल सा बुन रखा है
दूर से सुब्ह की धड़कन की सदा आती है
तेरा सरमाया तिरी आस यही हाथ तो हैं
और कुछ है भी तिरे पास यही हाथ तो हैं
तुझको मंज़ूर नहीं ग़ल्ब - ए - ज़ुल्मत[4] लेकिन
तुझको मंज़ूर है ये हाथ क़लम हो जायें
और मशरिक़ की कमी गह[5] में धड़कता हुआ दिन
रात की आहनी मैयत के तले दब जाये

◇ ◇ ◇

१. युद्ध में तल्लीन २. पहाड़ ३. आक्रमण ४. अंधकार की दासता ५. शरण

० ०

सुब्हे-आज़ादी

[अगस्त, १९४७ ई०]

ये दाग़ - दाग़ उजाला ये शब - ग़ज़ीदा[1] सहर
वो इन्तेज़ार था जिसका ये वो सहर तो नहीं
ये वो सहर तो नहीं जिसकी आर्ज़ू लेकर
चले थे यार कि मिल जायेगी कहीं न कहीं
फ़लक के दश्त में तारों की आख़िरी मंज़िल
कहीं तो होगा शबे - सुस्त मौज[2] का साहिल
कहीं तो जा के रुकेगा सफ़ीन - ए - ग़मे - दिल[3]
जवाँ लहू की पुर असरार[4] शाहराहों से
चले जो यार तो दामन पे कितने हाथ पड़े
दयारे - हुस्न की बेसब्र ख़्वाबगाहों से
पुकारती रहीं बाँहें बदन बुलाते रहे
बहुत अज़ीज़ थी लेकिन रुख़े - सहर की लगन
बहुत क़रीं था हसीनाने - नूर का दामन
सुबुक - सुबुक थी तमन्ना दबी - दबी थी थकन

१. रात्रि द्वारा परास्त २. वियोग की दुस्सह रात्रि ३. हृदय के दुख की नौका ४. रहस्यमयी

हिज्र की क़त्ल गाहों से सब जा मिले
क़त्ल गाहों से चुन कर अलम
और निकलेंगे उश्शाक़ के क़ाफ़िले
जिनकी राहे - तलब से हमारे क़दम
मुख़्तसर कर चले दर्द के फ़ासले
कर चले जिनकी ख़ातिर जहाँगीर हम
जाँ गँवाकर तिरी दिल बदी का भरम
हम जो तारीक राहों में मारे गये

◇ ◇ ◇

◇ ◇

दरीचा

गड़ी हैं कितनी सलीबें मिरे दरीचे में
हरेक अपने मसीहा के ख़ूं का रंग लिये
हरेक वस्ले - ख़ुदा वन्द की उमंग लिये
किसी पे करते हैं अब्रे - बहार को क़ुरबां
किसी पे क़त्ल महे - ताबनाक करते हैं
किसी पे होती है सरमस्त शाख़सार दुनीम
किसी पे बादे - सबा को हलाक करते हैं
हर आये दिन ये ख़ुदा वन्द गाने - मेहरो - जमाल
लहू में ग़र्क़ मिरे ग़मकदे में आते हैं
और आये दिन मिरी नज़रों के सामने उनके
शहीद जिस्म सलामत उठाये जाते हैं

◇ ◇ ◇

◇ ◇

बुनियाद कुछ तो हो
(क़व्वाली)

कोई सितम की ख़ामुशी आबाद कुछ तो हो
कुछ तो कहो सितम कशो फ़रियाद कुछ तो हो
बेदाद गर से शिकव - ए - बेदाद कुछ तो हो
बोलो कि शोरे - हश्र की ईजाद कुछ तो हो
मरने चले तो सितवते - क़ातिल का ख़ौफ़ क्या
इतना तो हो कि बाँधने पाये न दस्तो - पा
मक़्तल में कुछ तो रंग जमे जश्ने-रक़्स का
रंगीं लहू से पँज - ए - सैयाद कुछ तो हो
ख़ूं पर गवाह दामने - जल्लाद कुछ तो हो
जब खूं बहा तलब करें बुनियाद कुछ तो हो
गर तन नहीं ज़ुबाँ सही आज़ाद कुछ तो हो
दुश्नाम नाला हा-ओ-हू फ़रियाद कुछ तो हो
चीख़े है दर्द ऐ दिले - बरबाद कुछ तो हो
बोले कि शोरे - हुस्न की ईजाद कुछ तो हो
बोलो कि रोज़े - अद्ल की बुनियाद कुछ तो हो

◇ ◇ ◇

◇ ◇

कुछ चुने हुए शेर

रात यूँ दिल में तिरी खोई हुई याद आई
जैसे वीराने में चुपके से बहार आजाये
जैसे सहराओं में हौले से चले बादे - नसीम
जैसे बीमार को बे वज्ह क़रार आजाये

◇ ◇ ◇

दिल रहीने - ग़मे - जहाँ है आज
हर नफ़स तश्न - ए - फ़ुग़ाँ है आज
सख़्त वीराँ है महफ़िले - हस्ती
ऐ ग़मे - दोस्त तू कहाँ है आज

◇ ◇ ◇

वक़्फ़े - हिरमानो - यास रहता है
दिल है अक्सर उदास रहता है
तुम तो ग़म दे के भूल जाते हो
मुझको एहसाँ का पास रहता है

◇ ◇ ◇

फ़िज़ा - ए - दिल पे उदासी बिखरती जाती है
फ़सुर्दगी है कि जाँ तक उतरती जाती है
फ़रेबे - ज़ीस्त से क़ुदरत का मुद्दआ मालूम
ये होश है कि जवानी गुज़रती जाती है

◇ ◇ ◇

मता-ए-लौहो-क़लम छिन गई तो क्या ग़म है
कि ख़ूने-दिल में डुबो ली हैं उँगलियाँ मैंने
ज़ुबाँ पे मुहर लगी है तो क्या कि रखदी है
हरेक हल्फ़ - ए - ज़ंजीर में ज़ुबाँ मैंने

◇ ◇ ◇

न पूछ जबसे तिरा इन्तेज़ार कितना है
कि जिन दिनों से मुझे तेरा इन्तेज़ार नहीं
तिरा ही अक्स है उन अजनबी बहारों में
जो तेरे लब तिरे बाज़ू तिरा कनार नहीं

◇ ◇ ◇

सबा के हाथ में नर्मी है उनके हातों की
ठहर ठहर के ये होता है आज दिल को गुमाँ
वो हात ढूंढ रहे हैं बिसाते - महफ़िल में
कि दिल के दाग़ कहाँ हैं नशिस्ते - दर्द कहाँ

◇ ◇ ◇

फिर हश्र के सामाँ हुए ऐवाने - हवस में
बैठे हैं ज़ी - उल - अद्ल गुनहगार खड़े हैं
हाँ जुर्मे - वफ़ा देखिये किस किस पे है साबित
वो सारे ख़ताकार सरे - दार खड़े हैं

◇ ◇ ◇

तिरा जमाल निगाहों में ले के उट्ठा हूँ
निखर गई है फ़िज़ा तेरे पैरहन की सी
नसीम तेरे शबिस्ताँ से होके आई है
मिरी सहरा में महक है तिरे बदन की सी

◇ ◇ ◇

हमारे दम से है कू-ए-जुनूँ में अब भी खिजल
अबा-ए-शेखो क़बा - ए - अमीरो ताजे - शही
हमीं से सुन्नते - मंसूरो - क़ैस ज़िन्दा है
हमीं से बाक़ी है गुल दामनी-ओ-कजकुलही

◇ ◇ ◇

फ़िक्रे - सूदो - ज़ियाँ तो छूटेगी
मिन्नते - ई - ओ - आँ तो छूटेगी
ख़ैर दोज़ख़ में मै मिले न मिले
शेख़ साहब से जाँ तो छूटेगी

◇ ◇ ◇

सुब्ह फूटी तो आसमाँ पे तिरे
रंगे - रुख़सार की फुहार गिरी
रात छाई तो रू - ए - आलम पर
तेरी ज़ुल्फ़ों की आबशार गिरी

◇ ◇ ◇

न आज लुत्फ़ कर इतना कि कल गुज़र न सके
वो रात जो कि तिरे गेसुओं की रात नहीं
ये आरज़ू भी बड़ी चीज़ है मगर हरदम
विसाले-यार फ़क़त आरज़ू की बात नहीं

◇ ◇ ◇

सारी दुनिया से दूर हो जाये
जो ज़रा तेरे पास हो बैठे
न गई तेरी बेरुख़ी न गई
हम तेरी आरज़ू भी खो बैठे